



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 341]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 11, 2009/कार्तिक 20, 1931

No. 341]

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 11, 2009/KARTIKA 20, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 नवम्बर, 2009

अंतिम जांच परिणाम

विषय :—कोरिया जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित फास्फोरिक एसिड के सभी ग्रेडों और सभी सांदणियों (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 14/7/2007-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है), को ध्यान में रखते हुए;

2. जबकि मै. गुजरात अल्कलोज एंड कैमिकल्स लि. और सोलारेस कैमटेक लि. (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) ने अधिनियम और नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया है जिसमें कोरिया गणराज्य (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित फास्फोरिक एसिड के सभी ग्रेडों और सभी सांदणियों (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और सम्बद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए जांच शुरू करने का अनुरोध किया गया है;

3. और जबकि प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर दिनांक 12 नवम्बर, 2008 की समसंख्यक जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना जारी की थी जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई थी तथा जिसमें सम्बद्ध देश के मूल की अवधि वहाँ से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाएगा तो वह धरेलू उद्योग को हुई क्षति का भमाल करने के लिए पर्याप्त होगी।

4. और जबकि, प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हुए 24 अप्रैल, 2009 की अधिसूचना द्वारा अपने प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए और प्राधिकारी की ऐसी सिफारिशों पर कार्यवाही करते हुए राजस्व विभाग ने 22 जून, 2009 की अधिसूचना सं. 74/2009-सी.श. के तहत संबद्ध वस्तु पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया।

क. प्रक्रिया

5. इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

- (i) नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार इस जांच की शुरूआत के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को सूचित किया गया है।
- (ii) प्राधिकारी ने संबंधित नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देश के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय अंश की प्रतिलिपियां उपलब्ध कराई थी।
- (iii) प्राधिकारी ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की एक-एक प्रति संबद्ध देश के दूतावास, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार आयातकों और घरेलू उद्योग को भेजी थी और जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना जारी करने की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का उन्हें अवसर प्रदान किया था।
- (iv) कोरिया गणराज्य के किसी उत्पादक/निर्यातक से निर्धारित समय सीमा के भीतर कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। तथापि, मै. डी.सी. कैमिकल्स कंपनी लि., कोरिया गणराज्य से दिनांक 4.2.2009 को भेजा गया उत्तर निर्धारित समय सीमा के बाद, 19.2.2009, को प्राप्त हुआ जिसे अधूरा पाया गया है और तदनुसार संबद्ध उक्त उत्पादक/निर्यातक को इस जांच के प्रयोजनार्थ असहयोगी माना गया है।
- (v) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात उत्पादकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की एक-एक प्रति भेजी थी और नियम 6(4) के अनुसार इस पत्र को जारी किए जाने की तारीख से 40 दिनों के भीतर उनके विचारों से अवगत कराने की सलाह उन्हें दी थी।
- (vi) निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों से जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के संबंध टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं जिन पर इन जांच परिणामों में उचित स्थानों पर दि किया गया है।

- क. स्टार कैमिकल्स, (बॉम्बे) प्रा.लि., मुंबई
- ख. दि फर्टीलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
- ग. हिंदुस्तान यूनीलीवर लि.
- घ. मद्रास फर्टीलाइजर लि., चेन्नई
- ड. संदीप आर्गेनिक्स प्रा.लि., मुंबई

- (vii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों का अगोपनीय अंश नियम 6(7) के अनुसार प्राधिकारी द्वारा रखी गई एक सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा था और उसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा था।
- (viii) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से जांच अवधि समेत पिछले तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सूचना यह दर्शाती है कि उसके पास जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के कुल आयातों का ब्यौरा नहीं है; अतः इस प्रारंभिक जांच परिणाम में आईबीआईएस के आंकड़ों पर विश्वास किया गया है।
- (ix) आवेदक और अन्य घरेलू उत्पादकों से भी सूचना मांगी गई थी। सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की इष्टतम लागत और उसे बनाने और बेचने की लागत के आधार पर क्षतिरहित कीमत की गणना की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (x) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 24 अप्रैल, 2009 की प्रारंभिक जांच परिणामों की प्रतियां प्रतिवादी निर्यातकों और संबद्ध वस्तु के प्रयोक्ताओं, भारत में संबद्ध देश के दूतावास तथा घरेलू उद्योग सहित समस्त ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को भेजीं और प्रारंभिक जांच परिणामों पर हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियां आमंत्रित कीं। इस जांच से संबंधित पक्षकारों से प्रारंभिक जांच परिणामों की अधिसूचना के 40 दिन (अथवा विस्तारित अवधि) के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत करने का अनुरोध किया गया था।
- (xi) प्रारंभिक जांच परिणामों के उत्तर में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों को रिकॉर्ड में लिया गया है और उन पर इन जांच परिणामों के उचित खंडों में चर्चा की गई है।
- (xii) समस्त हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करने हेतु प्राधिकारी ने 11.8.2009 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की। सुनवाई के दौरान पक्षकारों द्वारा मौखिक अनुरोधों को लिखित में पुनः प्रस्तुत किया गया था जिन्हें इस जांच के प्रयोजनार्थ रिकॉर्ड में लिया गया है।
- (xiii) उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन 3 नवंबर, 2009 को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को

किया गया था और उस पर प्राप्त टिप्पणियों पर इस जांच परिणाम में विधिवत विचार भी किया गया है।

- (xiv) इस अधिसूचना में *** चिन्ह किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और प्राधिकारी द्वारा नियमों के अंतर्गत गोपनीय मानी गई सूचना को प्रदर्शित करता है।
- (xv) जांच अवधि में 1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2008 (12 महीने) की अवधि शामिल है। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल, 2005-मार्च, 2006 और अप्रैल, 2006-मार्च, 2007 तथा जांच अवधि शामिल है।

ख. याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार और प्राधिकारी द्वारा जांच:

6. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर प्रारंभिक जांच परिणामों और प्रकटन विवरण में भी चर्चा की गई है। जिन विचारों पर प्रारंभिक जांच परिणामों में पूर्व में चर्चा नहीं की गई है और जो प्रकटन विवरण तथा प्रकटन विवरण के उत्तर में व्यक्त किए गए हैं, उन पर नीचे उस सीमा तक संगत पैराग्राफों में चर्चा की गई है, जिस सीमा तक वे मामले पर प्रभाव डालते हैं। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच की गई है, उन पर विचार किया गया है और जहां उचित समझा गया है, नीचे संगत पैराग्राफों में उन पर कार्यवाही की गई है।
7. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने अनुरोध किए हैं :

- i. घरेलू उद्योग
- ii. वसु कैमिकल्स, मुंबई, आयातक
- iii. संदीप कैमिकल कार्पोरेशन, नई दिल्ली -आयातक
- iv. हिन्दुतान यूनीलीवर लिमिटेड
- v. बोहरिम इंडस्ट्री कार्पो., दक्षिण कोरिया
- vi. सेबित कैम. कंपनी लि., दक्षिण कोरिया
- vii. केनको मार्केटिंग इंक. दक्षिण कोरिया
- viii. मेटाकैम, दक्षिण कोरिया

8. सार्वजनिक सुनवाई के बाद निम्नलिखित से अनुरोध प्राप्त हुए थे :

- i. घरेलू उद्योग
- ii. ए.चौकसी कैमिकल इंड, मुंबई
- iii. मै. संदीप आर्गनिक्स प्रा.लि., मुंबई

- iv. हिन्दुतान यूनीलीवर लिमिटेड
- v. मै. सेबित कैम. कंपनी लि., दक्षिण कोरिया
- vi. मै. क्वांग जिन कैमिकल कंपनी लि., कोरिया
- vii. बोहरिम इंडस्ट्री कार्पो., दक्षिण कोरिया
- viii. कैनको मार्केटिंग इंक. दक्षिण कोरिया
- ix. बी आर कार्पोरेशन, दक्षिण कोरिया

9. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए जिन अनुरोधों पर प्रारंभिक जांच परिणामों में कार्रवाई की गई थी, उन्हें संक्षिप्तता की वजह से यहां दोहराया नहीं जा रहा है। प्रकटन विवरणों के बाद निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने समयावधि के भीतर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं :-

- (i) मै. बोहरिम इंडस्ट्री, दक्षिण कोरिया
- (ii) मै. बोरिम इंडस्ट्री, दक्षिण कोरिया
- (iii) मै. कैनको मार्केटिंग, दक्षिण कोरिया
- (iv) मै. क्वांग जिन कैमिकल कंपनी लि., दक्षिण कोरिया
- (v) मै. बी आर कार्पोरेशन, कोरिया गण.
- (vi) मै. सेबित कैम, कोरिया गण.
- (vii) हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड,
- (viii) घरेलू उद्योग
- (ix) मै. ए. चौकसी कैमिकल इंडस्ट्री

प्रकटन जारी होने के बाद विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों, अर्थात् आयातकों और घरेलू उद्योग ने अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं जिनका इस जांच परिणाम में उचित शीर्षों के अंतर्गत विश्लेषण किया गया है। विचाराधीन उत्पाद, घरेलू उद्योग के आधार एवं क्षति मापदंडों के बारे में विभिन्न आयातकों तथा निर्यातकों ने अपने पूर्ववर्ती अनुरोध दोहराए हैं। घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी से पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की पुष्टि करने का अनुरोध किया है और अम.डॉ. के मूल्य हास के कारण शुल्क अम.डॉ. में निर्धारित करने का भी अनुरोध किया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

10. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद फास्फोरिक एसिड के सभी ग्रेड और सभी सांद्रण (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) हैं क। फॉस्टफोरिक एसिड का प्रयोग सोडियम फास्फेट, कैल्शियम फॉस्फेट, मैग्नीशियम फास्फेट, अमोनियम फास्फेट के उत्पान, भेषज अनुप्रयोगों, पेयों, बीज के प्रसंस्करण, चीनी के जूस और चीनी के परिष्करण, खाद्य फास्फेट के निर्माण आदि में किया जाता है।

11. फॉस्फोरिक एसिड को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 और भारतीय व्यापार वर्गीकरण के उपशीर्ष सं. 2809.20 (सुमेलीकृत वस्तु प्रणाली पर आधारित) के अंतर्गत

एक अकार्बनिक रसायन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। फॉस्फोरिक एसिड के सभी रूपों/ग्रेडों/किस्मों के लिए सीमाशुल्क वर्गीकरण समान है। फॉस्फोरिक एसिड के आयातों पर कोई प्रतिबंध नहीं है क्योंकि इसका उत्पादन प्रतिबंधित सूची के अंतर्गत नहीं आता है। इस उत्पाद का आयात किसी भी गुणवत्ता में किसी भी देश से मुक्त रूप से किया जा सकता है।

12. आवेदकों ने यह दावा किया है कि सहभागी कंपनियों द्वारा उत्पादित उत्पाद और कोरिया गणराज्य से निर्यातित उत्पाद के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। दोनों उत्पादों में भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण वितरण और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण आदि जैसे मापदंडों की दृष्टि से तुलनीय विशेषताएं हैं। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के संबंध में अनिवार्य उत्पाद संबंधी विशेषताओं की तुलना से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु अनिवार्य उत्पाद गुणधर्मों की दृष्टि से संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के समान है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित फॉस्फोरिक एसिड कोरिया गणराज्य से आयातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु है।

ग. 1 विचाराधीन उत्पाद के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

13. भारत में संबद्ध वस्तु के आयातकों और प्रयोक्ताओं ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

14. वसु कैमिकल्स, मुंबई

i. भारतीय और आयातित सामग्री मुख्यतः आयातित सामग्री में ऐसेटिक एसिड की मौजूदगी जैसे विनिर्देशनों की दृष्टि से अलग है और इसमें अन्य अशुद्धताओं के संबंध में भी पीपीएम रूपरेखा पर भी अंतर है।

15. मै. संदीप आर्गेनिक्स, प्रा.लि., मुंबई

i. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु विचाराधीन आयातित उत्पाद से तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं है। अतः घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पादों को कोरिया गण. से आयातित वस्तु के "समान वस्तु" नहीं माना जाना चाहिए।

ii. दक्षिण कोरिया के एलसीडी विनिर्माता कच्ची सामग्री के रूप में शुद्ध फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग करते हैं और तत्पश्चात उक्त प्रक्रिया से प्राप्त फॉस्फोरिक एसिड का पुनः संसाधन ग्रेड शुद्ध रूप से भिन्न होते हैं। प्राप्त, पुनःचक्रित, अशुद्ध एवं पुनः संसाधित ग्रेड शुद्ध रूप से भिन्न होते हैं। भारत के घरेलू उत्पादक शुद्ध रूप का उत्पादन करते हैं।

iii. कोरियाई फॉस्फोरिक एसिड में काफी अधिक ऐसेटिक तत्व होता है और उसे दूर करने में काफी उच्च लागत आती है। इस प्रकार को हटाए जाने में आने वाली उच्च लागत तथा गुणवत्ता से समझौता करने की लागत को कोरिया से

हुए ऐसे आयातों की प्रभावी और वास्तविक लागत निकालने के लिए पहुंच लागत में शामिल करना होगा ।

- iv. उर्वरक ग्रेड का रंग हरा होता है, जबकि तकनीकी तथा खाद्य ग्रेड रंगहीन होते हैं ।
- v. कोरियाई सामग्री का उपयोग भेषज, फॉस्फेट लवण एवं खाद्य (पेय पदार्थ तथा चीनी) उद्योगों में नहीं होता है । इसका उपयोग वस्त्र, इलेक्ट्रोप्लेटिंग एवं कागज उद्योग में होता है ।

16. ए. चौकसी कैमिकल इंडस्ट्रीज, मुंबई

i. फॉस्फोरिक ऐसिड पर पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण विभिन्न फॉस्फेट लवणों की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है, जैसा कि फॉस्फेट लवण की उत्पादन लागत की तुलना से देखा जा सकता है जब स्वदेशी फॉस्फोरिक ऐसिड का उपयोग आयातित फॉस्फोरिक ऐसिड की तुलना में किया जाता है ।

17. वसू कैमिकल्स, मुंबई

- i. ऐसे अनेक अनुप्रयोग हैं, जिनमें कोरियाई फॉस्फोरिक ऐसिड का आसानी से उपयोग किया जा सकता है और इस प्रकार भारतीय विनिर्माता वैश्विक नुस्खे के अनुरूप अपने अंतिम उत्पादों की लागत नियंत्रण में रख सकते हैं ।

18. मै. हिंदुस्तान यूनीलीवर लि. की ओर से इकनॉमिक लॉ प्रैक्टिस, मुंबई

- क. विचाराधीन उत्पाद के दायरे में तकनीकी और खाद्य ग्रेड शामिल हैं । औद्योगिक प्रयोक्ताओं द्वारा डिटर्जेंट अर्थात् सर्फ एक्सल टिकिया के उत्पादन में विशेष रूप से शुद्ध फॉस्फोरिक ऐसिड का उपयोग किया जाता है । जांचोत्तर अवधि के बाद प्रयोक्ता याचिकार्कर्ताओं द्वारा इस ग्रेड को उपलब्ध न कराए जाने के कारण कोरिया गण से इस उत्पाद के व्यवहार्य स्रोत से अपेक्षा करने के लिए बाध्य हुए थे ।

- ख. औद्योगिक प्रयोक्ताओं ने "स्पैंट फॉस्फोरिक ऐसिड" का आयात किया है, जो प्रक्रिया का शेष, पुनःचक्रित तथा पुनः संसाधित अशुद्ध फॉस्फोरिक ऐसिड होता है जिसमें 30% ऐसेटिक ऐसिड होता है । यह अशुद्ध फॉस्फोरिक ऐसिड तरल क्रिस्टल डिस्प्ले की विनिर्माण प्रक्रिया का सह-उत्पाद होता है । इस उत्पाद का भारत में आयात किए जाने के बाद औद्योगिक प्रयोक्ता अशुद्धताओं को दूर कर स्टेंट फॉस्फोरिक ऐसिड को शुद्ध फॉस्फोरिक ऐसिड में तब्दील करने के लिए उजरती कामगार को काम पर लगाते हैं । अतः डीजीएडी को औद्योगिक प्रयोक्ता द्वारा प्रयुक्त उस ग्रेड को इस जांच के दायरे से अलग

रखना चाहिए जो स्पष्ट तौर पर "समान वस्तु" नहीं है क्योंकि इसमें सामान्य प्रक्रिया में याचिकाकर्ताओं से प्राप्त शुद्ध फॉस्फोरिक एसिड की भौतिक/रासायनिक विशेषताएं/अंतिम प्रयोक्ता के अनुरूप क्षमताएं नहीं होती हैं।

ग. यदि डीजीएडी इसे जांच के दायरे के भीतर मानता है तो क्षति विश्लेषण करते समय इसे आयातित "स्पेंट फॉस्फोरिक एसिड" तथा पुनः संसाधिक प्रभारों में शामिल किया जाना चाहिए ताकि घरेलू बाजार में याचिकाकर्ताओं को हो रही आरोपित क्षति पहुंचाने वाले ग्रेडों के साथ तुलना की जा सके।

19. मै. संदीप कैमिकल कार्पो., नई दिल्ली ने विचाराधीन उत्पाद के बारे में वही अनुरोध किए हैं, जैसे कि निर्यातकों ने किए हैं, जिनका उल्लेख निम्नलिखित पैरा 21 में किया गया है।

20. दक्षिण कोरिया के निम्नलिखित निर्यातकों ने प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद पहली बार अनुरोध किये हैं :-

- i. बोहरिम इंडस्ट्री कार्पो., दक्षिण कोरिया
- ii. सेवित कैम. कंपनी लि., दक्षिण कोरिया
- iii. कैनको मार्केटिंग इंक., दक्षिण कोरिया
- iv. मैटाकैम, दक्षिण कोरिया

21. कोरिया गण. के उपर्युक्त समस्त निर्यातकों ने एक जैसे अनुरोध किए हैं, जिन्हें नीचे दर्शाया गया है :-

- i. तकनीकी ग्रेड वस्तुतः पुनःचक्रित/प्रक्रियागत शेष/अशुद्ध/पुनःसंसाधित ग्रेड होता है।
- ii. दक्षिण कोरिया के एल सी डी विनिर्माता चीन से फॉस्फोरिक एसिड का आयात करते हैं और अपनी विनिर्माण प्रक्रिया में उसका उपयोग करते हैं। वे अपनी प्रक्रिया से फॉस्फोरिक एसिड प्राप्त करते हैं और तत्पश्चात उसकी बिक्री निर्यातकों को करते हैं। इसमें ऐसिटिक एसिड तथा आर्सेनिक तत्वों जैसी अशुद्धताएं होती हैं। इसका कई उद्योगों में उपयोग नहीं होता है।
- iii. भौतिक, रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रोटोगिकी, कच्ची सामग्री के उपयोग, उत्पाद के कार्य एवं उपयोग, विनिर्देशन, कीमत, वितरण एवं विपणन जैसे मापदंडों में अंतर है। उदाहरणार्थ उर्वरक ग्रेड का रंग हरा होता है जबकि कोरिया रंगहीन सामग्री का निर्यात करता है।

- iv. इस सामग्री का उपयोग भेषज, फॉस्फेट लवण एवं खाद्य (पेय पदार्थ एवं चीनी) उद्योगों में नहीं होता है। इसका उपयोग वस्त्र, इलेक्ट्रो प्लेटिंग एवं कागज उद्योग में होता है।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तु के अधिकांश आयात सौदों में मद का विवरण फॉस्फोरिक ऐसिड, तकनीकी ग्रेड या फॉस्फोरिक ऐसिड, खाद्य ग्रेड के रूप में दिया गया है। आयातकों द्वारा प्रदत्त आयात दस्तावेजों से भी कोरिया जन.गण. से तकनीकी ग्रेड के आयात का पता चलता है।

23. निर्यातकों तथा आयातकों ने उर्वरक ग्रेड-फॉस्फोरिक ऐसिड की तुलना कोरियाई मूल के फॉस्फोरिक ऐसिड के साथ की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी तुलना इस जांच के लिए संगत नहीं है क्योंकि उर्वरक ग्रेड का फॉस्फोरिक ऐसिड विचाराधीन उत्पाद में शामिल नहीं है।

24. कुछ आयातकों ने जांच विश्लेषण रिपोर्ट उपलब्ध कराई है। इसमें यह दर्शाया गया है कि कोरिया गण. से आयातित तकनीकी ग्रेड के फॉस्फोरिक ऐसिड में फॉस्फोरिक ऐसिड का न्यूनतम 85% सांद्रण निहित होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू रूप से उत्पादित तकनीकी ग्रेड के फॉस्फोरिक ऐसिड में भी फॉस्फोरिक ऐसिड का न्यूनतम 85% सांद्रण होता है।

25. जहां तक कोरिया से आयातित तकनीकी ग्रेड के फॉस्फोरिक ऐसिड में अधिक ऐसिड तत्व, उसको हटाने में आने वाली अतिरिक्त लागत के दावे का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- क. इन अनुरोधों के साथ संलग्न विश्लेषण रिपोर्टों के अनुसार ऐसिटिक ऐसिड तत्व इसके लिए कोरिया के मानक से कम है।
- ख. मै. हिंदुस्तान यूनीलीवर लि. ने उच्च ऐसेटिक तत्व का दावा करते हुए जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है। जिन अन्य आयातकों ने उच्च ऐसिटिक ऐसिड तत्व का दावा किया है, उन्होंने जांच अवधि के दौरान आयातित मात्रा का उल्लेख नहीं किया है। इसी प्रकार, उच्च ऐसिटिक तत्व का दावा करने वाले निर्यातकों ने उनके द्वारा जांच अवधि के दौरान आयातित मात्रा का उल्लेख नहीं किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जिन आयातकों ने ऐसिटिक ऐसिड के उच्च तत्व का दावा करते हुए संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है, और जिन्होंने आयात की मात्रा का उल्लेख नहीं किया है, उससे यह सिद्ध नहीं होता है कि जांच अवधि के दौरान कोरिया से हुए लगभग 15,000 मी.ट. के कुल आयातों में उच्च ऐसेटिक तत्व था। इसके अलावा, किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस आशय को कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है।

कि आयातित उत्पाद में ऐसिटिक ऐसिड तत्व निर्यातकों में से किसी निर्यातक द्वारा उल्लिखित मानक/अनुमत्य सीमा से अधिक था ।

ग. मैं हिंदुस्तान यूनीलीवर का यह दावा पुष्टिकृत नहीं है कि जांचोत्तर अवधि में उन्होंने स्पैट फॉस्फोरिक ऐसिड का आयात किया है । यद्यपि कंपनी ने जांचोत्तर अवधि में विचाराधीन उत्पाद का आयात करने का दावा किया है, तथापि, कंपनी ने इस आशय का साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है कि इसका उल्लेख "स्पैट फॉस्फोरिक ऐसिड" के रूप में किया गया है । इसके अलावा, प्राधिकारी ने पास उपलब्ध आयातों की सौदेवार सूचना (आईबीआईएस तथा डीजीसीआईएंडएस द्वारा उपलब्ध कराई गई) और विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराए गए दस्तावेजों से भी संबद्ध वस्तु की नामावली में "स्पैट फॉस्फोरिक ऐसिड" का पता नहीं चलता है । इसके अलावा, उनका यह दावा भी अपुष्टिकृत है कि उनके द्वारा अशुद्धताओं को हटाकर आयातित सामग्री को शुद्ध फॉस्फोरिक ऐसिड में परिवर्तित किया जा रहा है । प्राधिकारी यह मानते हैं कि न तो उच्च अशुद्धताओं के दावे की पुष्टि की गई है और न ही आयातकों द्वारा अतिरिक्त प्रसंस्करण को सिद्ध किया गया है ।

26. जहां तक कुछेक भारतीय आयातकों और कोरियाई निर्यातकों द्वारा किए गए इन अनुरोधों का संबंध है कि कारियाई सामग्री का उपयोग भेषज, फॉस्फेट लवण एवं खाद्य (पेय पदार्थ तथा चीनी) उद्योगों में नहीं होता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जिन आयातकों/निर्यातकों ने अनुरोध किए हैं वे सभी तकनीकी ग्रेड के फॉस्फोरिक ऐसिड का उपयोग कर रहे हैं जबकि भेषज एवं खाद्य उद्योगों द्वारा खाद्य ग्रेड के फॉस्फोरिक ऐसिड का उपयोग किया जाता है । जहां तक फॉस्फेट लवण का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रयोक्ता एवं आयातकों में से एक ने उस स्थिति में फॉस्फेट लवण की उत्पादन लागत की तुलना की है जब स्वदेशी फॉस्फोरिक ऐसिड का उपयोग आयातित फॉस्फोरिक ऐसिड की तुलना में किया जाता है । अतः यह प्रतीत होता है कि उनके द्वारा कोरिया गण से आयातित फॉस्फोरिक ऐसिड का उपयोग फॉस्फेट लवण के उत्पादन में किया जा रहा है । इसके अलावा, एक आयातक ने यह उल्लेख किया है कि ऐसे अनेक अनुप्रयोग हैं जिनमें कोरियाई फॉस्फोरिक ऐसिड का आसानी से उपयोग किया जा सकता है । प्राधिकारी हरेक स्थिति में यह तथ्य नोट करते हैं कि उत्पाद का अनेक अनुप्रयोगों में उपयोग होता है और जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा समान कार्यों एवं उपयोगों के उत्पाद का उत्पादन और आपूर्ति करने का संबंध है यह तथ्य असंगत है कि कोरिया से आयातित उत्पाद के सीमित अनुप्रयोग हैं । किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस बात का खंडन नहीं किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उन्हीं कार्यों एवं उपयोगों के लिए फॉस्फोरिक ऐसिड का उत्पादन और आपूर्ति की जा रही है जिनके लिए आयातित उत्पाद का उपयोग किया गया है ।

27. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों की विधिवत जांच करने के बाद प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद की उसी रूप में पुष्टि करते हैं जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों में विचार किया गया है और यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु विचाराधीन आयातित उत्पाद से तकनीकी तथा वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय

है। दोनों वस्तुएं उत्पाद विनिर्देशन, भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों, कार्य एवं उपयोगों, कीमत तथा सीमाशुल्क वर्गीकरण के संबंध में तुलनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और आपूर्त वस्तु आयातित वस्तु से तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है। अतः घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु को कोरिया गण, से आयातित वस्तु के "समान वस्तु" माना जा रहा है।

घ. घरेलू उद्योग

28. यह आवेदन संबद्ध वस्तु के दो घरेलू उत्पादकों अर्थात् मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि. और मै. सोलारिस कैमटेक लि. द्वारा किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध वस्तु के तीन अन्य उत्पादक अर्थात् मै. स्टार कैमिकल्स, मुंबई, मै. एसटीएस कैमिकल्स, मुंबई और मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. भी हैं।

29. घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में यह अनुरोध किया है कि घरेलू उद्योग की योग्यता का निर्धारण करते समय मै. एसटीएस कैमिकल्स के उत्पादन को शामिल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वे आधार स्तर से संबद्ध वस्तु का उत्पादन नहीं कर रहे हैं और आवेदकों से तकनीकी ग्रेड में संबद्ध वस्तु की खरीद कर रहे हैं तथा उसे खाद्य ग्रेड में परिवर्तित कर रहे हैं।

30. जांच की शुरुआत के बाद आवेदकों के अलावा, एक अन्य घरेलू उत्पादक मै. स्टार कैमिकल्स (बॉम्बे) प्रा.लि.ने संबद्ध देश से फॉस्फोरिक एसिड के सभी ग्रेडों और सांद्रणों (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) के आयात के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने संबंधी याचिका का विरोध किया है। उन्होंने यह अनुरोध किया है कि कोरिया से आयातों के द्वारा घरेलू उद्योग पर तर्कसंगत स्तर तक प्रतिस्पर्धात्मक दबाव कायम रहना चाहए। उन्होंने आगे अनुरोध किया है कि उनका अनुरोध मोटे तौर पर उपभोक्ताओं/अंतिम प्रयोक्ताओं के हित में है। इस तथ्य के बावजूद कि वे फॉस्फोरिक एसिड के विनिर्माता के रूप में प्रभावित भी होंगे, परंतु फिर भी हम यह सुझाव देना चाहते हैं कि उपभोक्ताओं के आम हित को देखते हुए कोरिया से आयातों पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए।

31. मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि., जो संबद्ध वस्तु के एक घरेलू उत्पादक भी हैं, ने जांच की शुरुआत से पहले याचिका को अपना समर्थन दिया है। उन्होंने यह बताया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना अत्यधिक आवश्यक है अन्यथा आवेदक कंपनियां और मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. रुग्ण हो जाएंगी और इससे इन कंपनियों के सभी कर्मचारी बुरी तरह प्रभावित होंगे।

32. देश में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात उत्पादकों के उत्पादन (मै. एसटीएस कैमिकल्स को छोड़कर) को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदकों के पास भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का 50% से अधिक हिस्सा है और यह मानते हैं कि इस जांच के प्रयोजनार्थ आवेदकों मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि. और मै. सोलारिस कैमटेक लि. के पास नियम 5(3) के अनुसार वांछित योग्यता है और नियम 2(ख) के अनुसार ये घरेलू उद्योग हैं।

ड. निर्धारित न्यूनतम सीमाएं

33. आईबीआईएस तथा डीजीसीआईएंडएस से प्राधिकारी को प्राप्त आयात संबंधी आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से आयात निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक रहे हैं।

च गोपनीयता

34. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता संबंधी दावों की जांच की है। इस जांच परिणाम में क्षमता, उत्पादन तथा बिक्री एवं आयात आंकड़ों से संबंधित घरेलू उद्योग के आंकड़ों को गोपनीय नहीं रखा गया है। ग्राहक, लागत, कीमत तथा उन आंकड़ों के संबंध में घरेलू उद्योग की सूचना को गोपनीय रखा गया है जिनसे उनके प्रतिस्पर्धियों को प्रतिस्पर्धी लाभ मिलेगा। अन्य सूचना को तब तक गोपनीय नहीं माना गया है, जब तक प्रतिवादी पक्षकार ने उक्त सूचना को गोपनीय रखने के बारे में पर्याप्त औचित्य प्रदर्शित नहीं किया है।

35. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद और सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात मै. ई एल पी, एडवोकेट्स ने मै. हिंदुस्तान यूनीलीवर लि. का प्रतिनिधित्व करते हुए यह अनुरोध किया है कि फॉस्फोरिक एसिड के दो अलग-अलग ग्रेडों के आयात की मात्रा से संबंधित आंकड़े उपलब्ध न करवाकर अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया गया है। प्राधिकारी ने दावे की जांच करने के बाद इस जांच परिणाम में तकनीकी ग्रेड तथा खाद्य ग्रेड के लिए आयात के अलग-अलग आंकड़ों का प्रकटन किया है।

छ. अन्य अनुरोध और उठाए गए मुद्दे

छ. 1 घरेलू उद्योग के विचार

36. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

- i. वर्तमान याचिका एक ही उत्पाद के लिए तीसरी याचिका है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्व में चीन के खिलाफ जांच शुरू की थी और शुल्क लगाने की सिफारिश की थी।
- ii. कोरिया गण. के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी द्वारा जारी प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।
- iii. घरेलू उद्योग का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक बनता है। इस प्रकार याचिकाकर्ताओं का हिस्सा "कुल पात्र भारतीय उत्पादन में एक बड़ा भाग" बनता है। इस प्रकार याचिकाकर्ताओं के पास नियम 5(3) के अनुसार आधार है और वे नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

- iv. चूंकि कोरिया गण. के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी द्वारा जारी प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है, इसलिए कोरिया गण. में संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य का निर्धारण बिक्री,, सामान्य तथा प्रशासनिक व्यय तथा उचित लाभ सहित उत्पादन की परिकलित लागत पर विचार-विमर्श करने के बाद किया जाए ।
- v. सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करने के बाद पाटन मार्जिन न केवल काफी अधिक है, अपितु न्यूनतम सीमा से भी ज्यादा है ।
- vi. सौदेवार आयात के आंकड़ों से यह पता नहीं चलता है कि स्पेंट फॉस्फोरिक एसिड जांच अवधि में आयातित उत्पाद था ।

छ.2 प्रयोक्ताओं तथा आयातकों के विचार

37. मै. हिंदुस्तान यूनीलीवर लि. की ओर से मै. इकॉनामिक लॉ प्रैक्टिस ने इस जांच परिणामों में संगत स्थानों पर की गई कार्रवाई के अलावा, निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

- i. डीजीएडी ने एक ऐसी जांच अवधि चुनी है जो जांच की शुरूआत से पूर्व लगभग 8 माह में समाप्त हो जाती है । जांच की शुरूआत की तारीख के निकट की जांच अवधि चुनने में विफल रहने के कारण डीजीएडी ऐसे किसी "सकारात्मक साक्ष्य" पर भरोसा करने में विफल रहे हैं जिससे स्पष्टः यह पता चल सके कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण इस समय क्षति हो रही है और क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है ।
- ii. आईबीआईएस में सीमित पत्तन आते हैं, जिसने डीजीसीआईएस जो आईबीआईएस के लोटों से अधिक पत्तनों को शामिल करता है, से अधिक आयात दर्शाए हैं । जिस पद्धति के अनुसार, इन आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है, उसे गोपनीय रखा गया है । इससे अनुरोध करने में हितबद्ध पक्षकारों की क्षमता अत्यधिक बाधित हुई है ।
- iii. चूंकि डिटर्जेंटों की कीमत फॉस्फोरिक एसिड की कीमत से अत्यधिक संवेदनशील होती है, इसलिए पाटनरोधी शुल्क का डिटर्जेंट की कीमत में वृद्धि के जरिए सार्वजनिक हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । पाटनरोधी शुल्क का उपयोग कोई क्षति हुए बिना भी उत्पाद की कीमत को कृत्रिम ढंग से बढ़ाने के एक सौदेबाजी के साधन के रूप में किया जाता है ।
- iv. फॉस्फोरिक एसिड के साथ संबद्ध प्रमुख कच्ची सामग्री के प्रभाव का औद्योगिक प्रयोक्ताओं पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है इसलिए डीजीएडी को निर्धारित शुल्क की तुलना में संदर्भ कीमत के आधार पर शुल्क की सिफारिश करने पर विचार करना

चाहिए। घरेलू उद्योग को प्राप्त निर्धारित पाटनरोधी शुल्क का लाभ उनकी कीमत में निहित होता है जिससे वह प्रयोक्ता उद्योगों की लागत पर अत्यंत उच्च मार्जिन प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं।

- v. यद्यपि कोरिया गण. के किसी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है, तथापि भारतीय मांग को पूरा करने में याचिकाकर्ताओं की वर्तमान अक्षमता को देश के व्यापक सामुदायिक हित में देखा जाना चाहिए।

38. मै. वसु कैमिकल्स, मुंबई

- क. भारतीय विनिर्माताओं ने कीमत गठबंधन कर फॉस्फोरिक एसिड की कृत्रिम कमी पैदा की है।
- ख. तकनीकी फॉस्फोरिक एसिड का आयात कोरिया से किया गया था जिससे भारतीय विनिर्माताओं की कीमतें कम हो गईं जो अभी भी आयातों के जरिए उपलब्ध कीमत से अधिक हैं।
- ग. यदि कोरियाई सामग्री पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है तो भारतीय विनिर्माता इसका आगे लाभ उठाएंगे और अन्य प्रयोक्ताओं को महंगा बनाकर अपने खुद के लाभ हेतु कीमतों में पुनः वृद्धि करेंगे।

39. मै. संदीप आर्गेनिक्स प्रा.लि., मुंबई

- i. फॉस्फोरिक एसिड के आयात की पहुंच लागत सस्ती हो गई है। इस प्रकार घरेलू/स्थानीय उत्पादक/विनिर्माता अप्रतिस्पर्धी बन गए हैं। यदि पाटनरोधी विभाग फॉस्फोरिक एसिड के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाता है तो यह आयातों पर मूल शुल्क को कम करने के मूलभूत सिद्धांत/प्रयोजन के विरुद्ध होगा।
- ii. यदि पाटनरोधी शुल्क हटाया/समाप्त नहीं किया जाता है तो हम वित्त मंत्रालय, संसद से संपर्क करेंगे, हम इसकी सूचना समाचार एजेंसियों को देंगे।
- iii. स्थानीय विनिर्माता/उत्पादक कई उत्पादों का व्यापार करते हैं। उन्हें अन्य उत्पादों (और न कि फॉस्फोरिक एसिड) के विनिर्माण के कारण घाटा हुआ होगा। स्थानीय/घरेलू विनिर्माता/उत्पादक एकाधिकार स्थापित करना चाहते हैं। वे इस विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं। यदि कोई डब्ल्यूटीओ (विश्व व्यापार संगठन) तथा नाटो (उत्तरी अंटलांटिक संधि संगठन) को शिकायत करेगा तो यह अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन जाएगा कि क्यों स्थानीय/घरेलू उत्पादक/विनिर्माता समस्त उत्पादों के आयातों पर पाटनरोधी एवं रक्षोपाय शुल्क चाहते हैं? समुद्री भाड़े (अंतर्राष्ट्रीय ढुलाई) को जोड़ने के बाद भी आयात घरेलू/स्थानीय कीमतों से सस्ते

- हैं। स्थानीय/घरेलू उत्पादकों की वित्तीय स्थिति ठोस, बेहतर और प्रतिस्पर्धी है तो क्यों स्थानीय/घरेलू विनिर्माता घाटे के बावजूद विनिर्माण कर रहे हैं? उन्हें अपना व्यापार बंद कर देना चाहिए।
- iv. कोरिया से आयातों में वृद्धि पाटित कीमतों के कारण नहीं हुई है बल्कि यह वृद्धि फॉस्फोरिक एसिड की पर्याप्ति आपूर्ति करने में घरेलू विनिर्माताओं की अक्षमता के कारण हुई है। स्थानीय मांग और आपूर्ति में अंतर है। घरेलू विनिर्माताओं द्वारा इस कमी का उपयोग फॉस्फोरिक एसिड की कीमत में वृद्धि कर आपूर्ति के माध्यम से किया जा रहा है। अतः घरेलू उद्योग को स्वतः क्षति हुई है और इसका फॉस्फोरिक एसिड के आरोपित पाटन से कोई संबंध नहीं है।
 - v. स्थानीय/घरेलू उत्पादकों/विनिर्माताओं की अप्रतिस्पर्धात्मका की सूचना बीएसई, एनएसई एवं सेवी को दी जाएगी।
 - vi. स्थानीय घरेलू उत्पादकों/निर्यातकों के अनेक प्राधिकृत एजेंट कोरिया गण. से फॉस्फोरिक एसिड का आयात कर रहे हैं।
 - vii. मंदी के कारण कोरिया गण. से फॉस्फोरिक एसिड की कीमतें नवां सेवा समुद्री पत्तन से 1800 अम.डॉ. से घटकर 450 अम.डॉ. प्रति मी.ट. हो गई हैं। सीआईएफ कीमत और सीमाशुल्क की दर दोनों में गिरावट के कारण आयातों की पहुंच कीमत में पर्याप्त कमी आई है।
 - viii. लोगों द्वारा चर्म एवं चीनी के डीएफआईए लाइसेंस (शुल्क मुक्त आयात प्राधिकार) तथा डीएफआरसी के अंतर्गत वस्तुओं की निकासी कर पाटनरोधी शुल्क का भुगतान किए बिना पाटनरोधी सामग्री की निकासी की जा रही है। इसलिए पाटनरोधी शुल्क का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
 - ix. फॉस्फोरिक एसिड अलग-अलग पैकिंग अर्थात् बल्क (आयसो टैंकों में), खुले (20 किग्रा. से 330 किग्रा.) आदि में आता है। कीमतों में तदनुसार अंतर होता है। पाटनरोधी शुल्क का निर्णय लेते समय इस पर विचार किया जाना चाहिए।
 - x. फॉस्फोरिक एसिड अन्य देशों से भी आता है। कोरिया गण. को ही क्यों लक्ष्य बनाया गया है और अन्य देशों को क्यों नहीं?
 - xi. खाद्य, डिटर्जेंट, रसायन, औषधि आदि में फॉस्फोरिक एसिड के विविध अनुप्रयोगों को देखते हुए कोरिया से हुए समस्त आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप ऐसे कई अंतिम उत्पादों की कीमत में वृद्धि होगी जिनका उपयोग कच्ची सामग्री के रूप में किया जाता है।

- xii. आवश्यक वस्तु अधिनियम तथा भारत के संविधान के अंतर्गत संरक्षण प्राप्त है । इस अधिनियम के अंतर्गत पाटनरोधी उपाय को चुनौती दी जा सकती है ।
- xiii. प्राकृतिक न्याय के मूलभूत सिद्धांत के अंतर्गत मै. डी.सी. कैमिकल्स कंपनी लि., कोरिया गण. के उत्तर पर विचार किया जाना चाहिए, भले ही यह अधूरा हों या उसे बाद में दायर किया गया हो ।
- xiv. व्यापारी/उर्वरक/कृषि ग्रेड को क्यों अलग रखा गया है ?
- xv. घरेलू उद्योग के आधार का निर्धारण करते समय मै. एसटीएस कैमिकल्स के उत्पादन को क्यों शामिल नहीं किया गया है ?
- xvi. उपभोक्ताओं/अंतिम प्रयोक्ताओं के समग्र हित को ध्यान में रखते हुए उपभोक्ताओं के व्यापक हित के मद्देनजर कोरिया से हुए आयातों पर कोई पाटनरोधी शुल्क न लगाया जाए ।
- xvii. लागत तय करते समय पाटनरोधी विभाग को निम्नलिखित घटकों पर विचार करना चाहिए :
- क. स्थानीय घरेलू उत्पादक: उत्पाद शुल्क/मॉडवेट/गेट पास, बिक्री कर, एजेंट की छूट/रिबेट/कमीशन ।
- ख. कोरिया गण. का निर्यातक/आपूर्तिकर्ता : पैकिंग लागत, वित्तीय लागत, निर्यातक मार्जिन, भाड़ा, एजेंट, इंडेंटर कमीशन/दलाली, निर्यात एवं आयात निकासी प्रभार, प्रलेखन प्रभार, उत्पाद शुल्क, एसएडी शुल्क, हैंडलिंग प्रभार, बिक्री कर ।
- xviii. लागत के बजाए बिक्री कीमत की तुलना की जानी चाहिए ।
- xix. चीन से पाटनरोधी प्रभाव पर विचार किया जाना चाहिए ।
- xx. स्थानीय/घरेलू उत्पादकों/विनिर्माताओं द्वारा व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार ।
- xxi. पाटनरोधी शुल्क लागू करने के बाद भी आयात जारी रहना ।
- xxii. फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग अन्य उद्योगों में भी किया जाता है ।
- xxiii. उर्वरक ग्रेड का रंग हरा है जबकि तकनीकी एवं खाद्य ग्रेड रंगहीन है ।

- xxiv. घरेलू उत्पादकों की बिक्री में कमी उत्पाद शुल्क में कमी के कारण आ सकती है ।
- xxv. प्रश्नावलियाँ अनेक पक्षकार (आयातकों, निर्यातकों, विनिर्माताओं, दूतावासों, ट्रेड यूनियनों आदि) को भेजी जानी चाहिए थी ।
- xxvi. भारत और दक्षिण कोरिया ने हाल में मुक्त व्यापार करार पर हस्ताक्षर किए हैं । पाटनरोधी उपाय से इन दोनों देशों के बीच संबंध प्रभावित होंगे ।
- xxvii. दक्षिण कोरिया द्वारा भारत से हुए निर्यातों पर पाटनरोधी उपाय लागू कर इसका प्रतिकार किया जाएगा ।

40. ए.चौकसी कैमिकल इंडस्ट्रीज, मुंबई

- i. फॉस्फोरिक एसिड पर पाटनरोधी शुल्क के कारण विभिन्न फॉस्फेट लवणों की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है । कंपनी ने स्वदेशी फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग आयातित फॉस्फोरिक एसिड के स्थान पर किए जाने की स्थिति में फॉस्फेट लवण की उत्पादन लागत की तुलना उपलब्ध कराई है ।
- ii. फॉस्फेट लवणों के उपभोक्ताओं ने फॉस्फेट लवणों का आयात कर अपनी जरूरतें पूरी करना शुरू कर दिया है क्योंकि आयातित सामग्री काफी सस्ती है । इससे हमारा व्यापार घाटे में गया है ।
- iii. भारतीय विनिर्माताओं की कुल उत्पादन क्षमता भारत में खपत हेतु वास्तविक जरूरत से अत्यंत कम है । प्रचलित भारतीय बाजार में हमेशा मुद्रास्फीति की स्थिति रहेगी और फॉस्फोरिक एसिड के भारतीय उपभोक्ता प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकेंगे ।
- iv. अधिकांश फॉस्फेट उद्योग लघु उद्योग हैं ।
- v. फॉस्फोरिक एसिड वाले फॉस्फेट लवणों का 85% उत्पादन भारतीय कंपनी द्वारा किया जाता है जो किफायती नहीं है और लघु क्षेत्र के ढहने का हमेशा भय बना रहता है ।
- vi. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय को चीन से मुख्यतः सोडियम हैक्सामाइट फॉस्फेट 68% के फॉस्फेट लवणों के पाटन के विरुद्ध नियंत्रणकारी साधनों को उपलब्ध कर भारतीय अर्थव्यवस्था के हित में कारगर ढंग से हस्तक्षेप करना होगा ।

41. संदीप कैमिकल कार्पोरेशन, नई दिल्ली

- i. कीमतें सांद्रणों, प्रतिशत, पैकिंग एवं ग्रेडों के अनुसार अलग-अलग होती हैं।
- ii. स्थानीय विनिर्माताओं की कीमत एवं लाभ में वृद्धि हुई है। उच्च कीमत के कारण उनके बाजार हिस्से में गिरावट आई है।
- iii. दक्षिण कोरिया के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है क्योंकि अंतिम प्रयोक्ता/उपभोक्ता ने अपनी विनिर्माण प्रक्रिया बदल दी है ताकि दक्षिण कोरिया की सामग्री स्वीकार की जा सके। उन्होंने ऐसेटिक ऐसिड तत्व को कम करने की कोशिश की है।
- iv. वित्त मंत्रालय ने मूल आयात शुल्क घटाकर 5% कर दिया है ताकि फॉस्फोरिक ऐसिड का आयात बढ़ाया जा सके। यह निर्णय आयातों को व्यवहार्य बनाने के लिए बजट में लिया गया था।
- v. दक्षिण कोरिया के निर्यातकों द्वारा निर्यात अध्याय शीर्ष 2809201090 के अंतर्गत किया जाता है। भारतीय सीमाशुल्क द्वारा यह अध्याय शीर्ष 28092010 के अंतर्गत वर्गीकृत है।
- vi. स्थानीय विनिर्माताओं द्वारा सामग्री की स्टॉकिंग और होल्डिंग की जा रही है ताकि कीमत बढ़ाने के लिए बाजार में इसकी कमी पैदा की जा सके। ये प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। उन्हें प्रोत्साहन मिलता है।
- vii. वर्तमान आयात चीन और दक्षिण कोरिया से व्यवहार्य नहीं है। दक्षिण कोरिया ने मुख्यतः मंदी और उनकी मुद्रा में परिवर्तन/घट-बढ़ के कारण निर्यात किया है।
- viii. दक्षिण कोरिया में व्यापारी इस सामग्री का निर्यात कर रहे हैं इसलिए वहाँ व्यापारियों का मार्जिन, इंडनेंटल कमीशन, वित्तीय लागत, ऋण लागत, स्थानीय प्रशासन लागत आदि का प्रावधान है। हमारा आपसे अनुरोध है कि पाटनरोधी शुल्क की राशि कम की जाए।

छ.3 निर्यातकों के विचार

42. दक्षिण कोरिया के निर्यातकों अर्थात् मै. बोहरिम इंड कार्प., मै. सेवित कैम कंपनी लि., मै. कैनको मार्केटिंग इंक. तथा मै. मैटाकैम ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

- क. कीमतें सांद्रणों, प्रतिशत, पैकिंग एवं ग्रेडों के अनुसार अलग-अलग होती हैं।
- ख. स्थानीय विनिर्माताओं की कीमत एवं लाभ में वृद्धि हुई है। उच्च कीमत के कारण उनके बाजार हिस्से में गिरावट आई है।
- ग. वित्त मंत्रालय ने मूल आयात शुल्क घटाकर 5% कर दिया है ताकि फॉस्फोरिक ऐसिड का आयात बढ़ाया जा सके। यह निर्णय आयातों को व्यवहार्य बनाने के लिए बजट में लिया गया था।

घ. स्थानीय विनिर्माताओं द्वारा सामग्री की स्टॉकिंग और होलिंग की जा रही है ताकि कीमत बढ़ाने के लिए बाजार में इसकी कमी पैदा की जा सके । ये प्रतिस्पर्धी नहीं हैं । उन्हें प्रोत्साहन मिलता है ।

छ.4 प्राधिकारी द्वारा जांच

43. क्षति के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का विश्लेषण घरेलू उद्योग के आंकड़ों के आधार पर किया गया है ।

44. जहां तक फॉस्फोरिक एसिड की कीमत के लिए डिटर्जेंटों की कीमत की संवेदनशीलता का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रयोक्ता उद्योग ने न तो प्रतिकूल प्रभाव के अपने दावे की पुष्टि की है और न ही विधिक प्रावधानों की पुष्टि की है जिनके अंतर्गत उन पर विचार कर समाधान किया जा सके ।

45. जहां तक मांग, आपूर्ति के अंतर को पाटने के लिए भारत में आयातित उत्पाद की उपलब्धता पर पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य आम तौर पर पाटन की अनुचित व्यापार प्रथा द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके जो देश के आम हित में है । अननंतिम पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देश से होने वाले आयात किसी भी तरह से प्रभावित नहीं होंगे और इसलिए इससे उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से कीमत में इस बात के मद्देनजर उचित एवं निष्पक्ष स्तर तक वृद्धि नहीं होगी कि पाटनरोधी शुल्क की मात्रा क्षति की मात्रा तक सीमित की जा रही है ।

46. यह अनुरोध किया गया है कि फॉस्फोरिक एसिड के साथ संबद्ध प्रमुख कच्ची सामग्री के प्रभाव का औद्योगिक प्रयोक्ताओं पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है इसलिए डीजीएडी को निर्धारित शुल्क की तुलना में संदर्भ कीमत के आधार पर शुल्क की सिफारिश करने पर विचार करना चाहिए । प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों ने यह सिद्ध नहीं किया है कि संदर्भ कीमत से फटन एवं परिणामी क्षति का किस प्रकार समाधान होगा । इस तथ्य के मद्देनजर कि निविष्टियों की कीमत अस्थिर है, संदर्भ कीमत के रूप में पाटनरोधी शुल्क क्षतिकारी पाटन की समाप्ति हेतु उचित और तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता है ।

47. जहां तक जांच अवधि के चयन का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि यह जांच घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर और पाटनरोधी नियमों के अनुसार शुरू की गई थी । प्राधिकारी ने अरोपित पाटन और घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति की तथ्यपरक जांच की है । जहां तक जांच अवधि के चयन का संबंध है, जो जांच की शुरूआत से पूर्व लगभग 8 माह में समाप्त हो जाती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसा कोई विधिक प्रावधान नहीं है जिसके तहत जांच अवधि तथा जांच की शुरूआत के बीच 8 माह के समयांतराल पर विचार न किया जा सके ।

48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी भारतीय आयातक/प्रयोक्ता ने यह स्वीकार नहीं किया है कि आयातों की पहुंच लागत कम हो गई है। एक अन्य आयातक/प्रयोक्ता ने यह बताया है कि सीआईएफ कीमत तथा सीमाशुल्क की दर, दोनों में गिरावट के परिणामस्वरूप आयातों की पहुंच कीमत में भारी गिरावट आई है, जिससे घरेलू उद्योग के इस तर्क की पुष्टि होती है कि आयातों से घरेलू बाजार में कीमतों में कटौती हो रही है।

49. जहां तक इस अनुरोध का संबंध है कि स्थानीय घरेलू उत्पादकों/निर्यातकों के अनेक प्राधिकृत एजेंट कोरिया गण, से फॉस्फोरिक ऐसिड का आयात कर रहे हैं, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के किसी एजेंट द्वारा संबद्ध वस्तु के आयात से यह सिद्ध नहीं होता है कि आयातों से क्षति नहीं हुई है। इसके विपरीत सच्चाई यह है कि प्राधिकृत एजेंट स्वयं आयातित फॉस्फोरिक ऐसिड का व्यापार कर रहे हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है।

50. आयातकों ने यह अनुरोध किया है कि कोरिया गण, के निर्यातिक/आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्यात पर काफी अधिक व्यय अर्थात पैकिंग लागत, वित्तीय लागत, निर्यातक मार्जिन, भाड़ा, एजेंट, इंडेंटर कगीशन/दलाली, आयात एवं निर्यात पर निकासी प्रभार, प्रलेखन प्रभार, हैंडलिंग प्रभार, बिक्री कर आदि पर व्यय किए जा रहे हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन का निर्धारण व्यापार के समान स्तर पर करना अपेक्षित होता है। आयातकों ने यह स्वीकार किया है कि इन समस्त व्यय के बावजूद आयातों की पहुंच लागत सस्ती हुई है।

ज. पाटन मार्जिन का निर्धारण

ज.१ सामान्य मूल्य

51. कोरिया गणराज्य के एकमात्र प्रतिवादी निर्यातक मै. डी सी कैमिकल कंपनी लि. ने कोरिया गणराज्य में संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत और उत्पादन लागत के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। इसके अलावा काफी अधूरे उत्तर के मद्देनजर और वह भी निर्धारित समय सीमा के बाद दिए जाने पर मै. डी सी कैमिकल कंपनी लि. को इस जांच के प्रयोजनार्थ असहयोगी माना गया है। अतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की कार्रवाई की है। प्राधिकारी ने अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर फॉस्फोरिक ऐसिड के विनिर्माण हेतु कच्ची सामग्री, खपत मानदंडों, परिवर्तन लागत तथा घरेलू उद्योग के बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक शीर्षों तथा उचित लाभ पर विचार करते हुए कोरिया गणराज्य में संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। कोरिया गणराज्य के सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए पैकड़ रूप में फॉस्फोरिक ऐसिड का परिकलित सामान्य मूल्य निम्नानुसार निर्धारित किया गया है:-

फॉस्फोरिक ऐसिड का ग्रेड	पैकड़ (अमरीकी डॉलर/मी.ट.)
तकनीकी ग्रेड	***
खाद्य ग्रेड	***
भारित औसत	***

ज.2 निर्यात कीमत

52. प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सूचना में संबद्ध वस्तु के लिए समर्पित कोडों में सभी आयात सौदे शामिल नहीं हैं और इसलिए उन्होंने आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त आयातों के सौदावार ब्यौरों के अनुसार जांच अवधि के लिए निर्यात कीमत निर्धारित की है। इस जांच में कोरिया गणराज्य से किसी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है। अतः इन जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ भारत में आयातों के आंकड़े आईबीआईएस द्वारा बताए गए आंकड़ों के रूप में विश्वसनीय माने गए हैं। कृषि/उर्वरक के संबंध में आयातों पर निर्यात कीमतों के निर्धारण के लिए विचार नहीं किया गया है। सौदावार आयात आंकड़ों को आगे खाद्य और तकनीकी ग्रेड के रूप में पृथक किया गया था। निर्यात के आंकड़ों से यह भी देखा गया है कि जांच अवधि के दौरान फॉस्फोरिक एसिड (खाद्य और तकनीकी ग्रेड) के आयात छोटी खेपों अर्थात् कुछ किग्रा. से 137 मी.टन के बीच हुए हैं जो केवल पैकड़ रूप में ही हो सकते हैं। इसके अलावा, आयातकों में से एक आयातक के इस अनुरोध के आधार पर कि कोरिया गण, का निर्यातक/आपूर्तिकर्ता पैकिंग लागत सहित निर्यात पर अधिकांश व्यय कर रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गण, से निर्यात केवल पैकड़ रूप में ही हुए हैं।

53. आयात आंकड़ों में सूचना सीआईएफ मूल्य के आधार पर उपलब्ध कराई गई है। निर्यात के देश में अंतरदेशीय भाड़, समुद्री भाड़, समुद्री बीमा तथा पत्तन व्यय के संबंध में, निर्यात सौदों पर किए गए व्यय को कारखाना द्वारा निर्यात कीमत की गणना हेतु समायोजित किया गया है। तकनीकी और खाद्य ग्रेड के लिए कारखाना द्वारा निर्यात कीमत का निर्धारण अलग-अलग किया गया है। इस पद्धति को अपना कर कारखाना द्वारा निर्यात कीमत तकनीकी ग्रेड के लिए 519.56 अम.डॉ. प्रति मी.टन और खाद्य ग्रेड के लिए 469.72 अम. डॉ. प्रति मी.ट. निर्धारित की गई है।

ज.3 पाटन मार्जिन

54. पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इस प्रकार अनंतिम रूप से निर्धारित कारखाना द्वारा सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना व्यापार के समान स्तर पर की गई है और संबद्ध देश से निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार निर्धारित किया गया है:-

अम.डॉ./मी.ट.

निर्यातक/उत्पादक	आयात की मात्रा (मी.ट.)	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
तकनीकी ग्रेड	15281	****	****	****	35-45
खाद्य ग्रेड	127	****	****	****	70-80
भारित औसत		****	****	****	35-45

ऊपर यथानिर्धारित पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

झ. क्षति निर्धारण

झ.१ घरेलू उद्योग के विचार

55. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-
- क. घरेलू उद्योग के निष्पत्ति में मात्रात्मक मापदंडों के रूप में सुधार हुआ है जिससे स्पष्टतः यह पता चलता है कि बाजार में प्रतिस्पर्धा करने और अपने प्रचालन बनाए रखने के लिए घरेलू उद्योग सर्वोत्तम प्रयास कर रहा है।
 - ख. चीन के खिलाफ शुल्क लगाए जाने के बाद निष्पादन बढ़ने की उम्मीद थी।
 - ग. कीमत मापदंडों के संबंध में निष्पादन में सुधार हुआ परंतु घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटा होता रहा।
 - घ. घरेलू उद्योग के निष्पादन में बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग, उत्पादन और उत्पादकता के संबंध में समग्र रूप में सुधार हुआ।
 - उ. तथापि, कीमत, लाभ, नकद लाभ, निवेश पर आय और बाजार हिस्से के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन इष्टतम से कम रहा।
 - च. घरेलू उद्योग को क्षति किसी अन्य कारक से नहीं हुई है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कीमतों और संबद्ध देश के निर्यातकों की कीमतों के बीच पर्याप्त अंतर है। यद्यपि, घरेलू उद्योग इष्टतम से कम कीमत की पेशकश कर रहा है तथापि, आयातों में वृद्धि हो रही है।
 - छ. पाटित आयातों के कारण हुई कीमत कटौती की वजह से घरेलू उद्योग पर कीमत दबाव बन रहा है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हो रहा है जिसमें जांच अवधि में वृद्धि हुई है।
 - ज. सतत वित्तीय घाटे के परिणामस्वरूप नकद प्रवाह और निवेश पर आय के संबंध में प्रतिकूल निष्पादनात्मक प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार सतत घाटे, लगाई गई पूंजी पर नकारात्मक आय तथा नकद प्रवाह का प्रत्यक्ष कारण चीन जन.गण. से पूर्व में हुए और अब चीन गण. से हुए पाटित आयात हैं।
 - झ. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन प्रतिकूलतः प्रभावित हुआ है जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

- ज. पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।
- ट. कोरिया गण. से संबद्ध वस्तु फॉस्फोरिक एसिड के समस्त ग्रेडों (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगागया जाना अपेक्षित है।
- ठ. निविष्टियों की बढ़ती हुई कीमत को अन्य ज्ञात कारक के रूप में अभिज्ञात नहीं किया गया है। इसके विपरीत इस पर क्षति के एक मापदंड के रूप में विचार किया गया है।
- ड. भारतीय बाजार में पाटन के कारण घरेलू उद्योग अपनी क्षमताओं का इष्टतम उपयोग करने में असमर्थ है।
- ढ. उत्पाद के सतत प्रतिकूल निष्पादन-प्रथमतः चीन से और अब कोरिया से हुए पाटन के कारण अपनी क्षमता बढ़ाने में घरेलू उद्योग असमर्थ है।
- ण. घरेलू उद्योग अवरोध समाप्त होने पर ही क्षमता में 15-20% की वृद्धि कर सकता है। जब वर्तमान निवेश से भारी घाटा हो रहा है तो ऐसी स्थिति में क्षमता विस्तार आग में ईंधन का ही काम करेगा।
- त. बाजारी मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग की अक्षमता को पाटित आयातों का कारण नहीं माना जा सकता जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी तथा सेस्टेट के पिछले निर्णयों द्वारा स्पष्ट किया गया है।
- थ. क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है और इसलिए उत्पादन बढ़ा है लेकिन घरेलू उद्योग ने दक्षिण कोरिया से हुए आयातों के कारण बाजार हिस्सा गंवाया है।
- द. रोजगार की हानि और संवर्धित मजदूरी के कारण घटी हुई उत्पादकता का समायोजन उत्पादकता में वृद्धि द्वारा नहीं हुआ है।

झ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

56. मै. हिंदुस्तान यूनीलीवर लि. की ओर से मै. इकोनॉमिक लॉ प्रैक्टिस, मुंबई ने क्षति निर्धारण के बारे में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

- (क) प्रारंभिक जांच परिणाम कानूनन दोषपूर्ण हैं और ये पाटनरोधी नियमावली तथा पाटनरोधी करार का स्पष्ट उल्लंघन हैं। माननीय डीजीएडी ने क्षति के कारकों और आरोपित पाटन के बीच कारणात्मक संबंध का गलत निर्धारण किया है।
- (ख) डीजीएडी के लिए नियमावली में सूचीबद्ध समस्त संगत क्षति कारकों तथा अन्य ज्ञात कारकों पर विचार करना और तत्पश्चात पाटित आयातों और क्षति कारकों के बीच

कारणात्मक संबंध की पुष्टि करना अपेक्षित होता है। डीजीएडी इस आशय का स्पष्टीकरण देने में विफल रहा है कि घरेलू उद्योग ने अनेक क्षति कारकों में सकारात्मक प्रवृत्ति के बावजूद क्षति उठाई है।

- (ग) प्रारंभिक जांच परिणाम नियमावली के अनुबंध-II (ii), (iv) और (v) तथा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.2, 3.4 एवं 3.5 का स्पष्ट उल्लंघन करते हुए जारी किए गए हैं।
- (घ) घरेलू उद्योग को दक्षिण कोरिया से हुए आरोपित पाटित आयातों के कारण कोई क्षति नहीं हुई है।
- (ङ) प्रारंभिक जांच परिणाम इसलिए कानूनन दोषपूर्ण हैं क्योंकि बिक्री एवं आयातों के प्रयोजनार्थ आंकड़ों पर पूर्ववर्ती 3 वर्षों को देखते हुए जांच अवधि से विचार किया गया है जबकि प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 55 के बाद कीमत संबंधी आंकड़ों पर विशिष्ट रूप से पूर्ववर्ती दो वर्षों को देखते हुए जांच अवधि को देखते हुए ही विचार किया गया है।
- (च) क्षति के अधिकांश कारकों में सकारात्मक प्रवृत्ति के बावजूद डीजीएडी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है और वह इसका कोई तर्क देने में विफल रहा है।
- (छ) उद्योग को क्षति जांच अवधि के दौरान रॉक फॉस्फेट की बढ़ती हुई कीमत के कारण हुई है। परिणामतः क्षति एवं आरोपित पाटित आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।
- (ज) सुस्थापित न्यायशास्त्र के मद्देनजर माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग के लिए क्षति के समग्र आंकड़ों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए न कि केवल याचिकाकर्ताओं के आंकड़ों का, भले ही वे संख्या में अधिक हों।
- (झ) प्रारंभिक जांच परिणाम में क्षति विश्लेषण को स्पष्टतः छिपाया गया है ताकि पाटनरोधी शुल्क को अवैध रूप से लागू किया जा सके।
- (ञ) घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं बिक्री में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके अलावा यह देखा जा सकता है कि बाजार हिस्से में गिरावट घरेलू बाजार में मांग को पूरा करने में घरेलू उद्योग की असमर्थता के कारण आई है।
- (ट) घरेलू बाजार के आकार में 51% की वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री केवल 31% है क्योंकि घरेलू उद्योग के पास घरेलू उद्योग को आपूर्ति करने की क्षमता नहीं है।

झ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

57. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में क्षति के निर्धारण हेतु स्थापित सिद्धांतों में यह उल्लेख किया गया है कि :

"क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और ; (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी । "

58. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों पर प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (IV) में यह उल्लेख है कि :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा । "

झ.3.1 आयातों की मात्रा और बाजार हिस्सा

59. सबद्ध देश और अन्य देशों से आयातों की मात्रा निम्नानुसार रही है :-

आयात मी.ट. में	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
कोरिया जन.गण.	0	324	772	15,408
प्रवृत्ति	0	100	238	4,756
चीन जन.गण.	3,148	4,600	3,378	2469
	100	146	107	78
अन्य देश	2,974	230	429	252
	100	8	14	8
कुल आयात	6,122	5,154	4,579	18,129
प्रवृत्ति	100	84	75	296
आयातों में बाजार %				
हिस्सा				
कोरिया जन.गण.	-	6.29	16.86	84.99
प्रवृत्ति		100	268.19	1,351.98
चीन जन.गण.				
(जिन पर शुल्क लागू है)	51.42	89.25	73.77	13.62
प्रवृत्ति	100	174	143	26

अन्य देश	48.58	4.46	9.37	1.39
प्रवृत्ति	100	9	19	3

60. आयातों के विश्लेषण के लिए डीजीसीआईएस के आयातों के सौदावार आंकड़ों पर वर्ष 2004-2005 से 2006-07 तक के लिए भरोसा किया गया है। तथापि, वर्ष 2007-08 के लिए आईबीआईएस द्वारा बताए गए आयात डीजीसीआईएंडएस में दिए आयातों से काफी अधिक हैं। डीजीसीआईएंडएस ने कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तु के 6935 मी.टन के आयातों का ब्यौरा दिया है जबकि आईबीआईएस द्वारा 15408 मी.टन के आयात दर्शाए गए हैं। चूंकि डीजीसीआईएंडएस को समर्पित सीमाशुल्क कोडों में संबद्ध वस्तु के आयातों की संपूर्ण मात्रा की जानकारी नहीं है, इसलिए मात्रात्मक प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु आईबीआईएस द्वारा बताई गई मात्रा पर विश्वास किया गया है। प्रकटन विवरण के बाद एक हितबद्ध पक्षकार अर्थात् आयातक ने यह टिप्पणी की है कि प्राधिकारी ने आंकड़ों के विभिन्न स्रोतों से आयात के आंकड़े लेकर अपनी जिम्मेवारी नहीं निभाई है जबकि उनका याचिका में उल्लेख नहीं है और उसने प्राधिकारी से इस संबंध में उसके अनुरोध पर विचार करने का आग्रह किया है। आयातक के अनुरोध का विश्लेषण किया गया है और संबद्ध देश एवं अन्य देशों से हुए संबद्ध वस्तु के आयात के लिए डीजीसीआईएंडएस तथा आईबीआईएस के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के बाद यह नोट किया गया था कि पूर्ववर्ती अवधि अर्थात् 2004-05 से 2006-07 से आयात की मात्रा समान रही है जैसा कि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में उल्लेख है। उदाहरणार्थ वर्ष 2004-05 में डीजीसीआईएंडएस और आईबीआईएस दोनों के अनुसार संबद्ध वस्तु की आयात मात्रा शून्य थी, जबकि वर्ष 2005-06 में डीजीसीआईएंडएस के अनुसार यह मात्रा 324 मी.ट. और आईबीआईएस के अनुसार 403 मी.ट. रही थी। यही प्रवृत्ति वर्ष 06-07 के दौरान बनी रही जब कोरिया गण. से संबद्ध वस्तु का आयात डीजीसीआईएंडएस के अनुसार 772 मी.ट. और आईबीआईएस के अनुसार, 722 मी.ट. के हुए थे। इस प्रकार मात्रा में समानता है जिसकी सूचना जांच अवधि के शुरुआत तक दोनों स्रोतों से मिली है। तथापि, प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में जांच अवधि के लिए आईबीआईएस की मात्रा और कीमत ली है क्योंकि इन दोनों स्रोतों के अनुसार आयात की मात्रा में भारी अंतर है। यह भी नोट किया जाता है कि इन दोनों स्रोतों से संबद्ध वस्तु की प्रति किग्रा. कीमत भी समान है।

61. फॉस्फोरिक एसिड के आयात पैक और खुले रूप में किए जा सकते हैं। घरेलू उद्योग ने आवेदन में यह तर्क दिया है कि आयात केवल पैकड़ रूप में किए जा रहे हैं। आयात संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि कोरिया गणराज्य से फॉस्फोरिक एसिड (खाद्य और तकनीकी ग्रेड) की आयात खेयें 52 किग्रा. से 137.20 मी.टन के बीच रही थीं। चूंकि जहाज पर लदान में खुले रूप में फॉस्फोरिक एसिड की ऐसी कम मात्रा का आयात करना वाणिज्यिक रूप से व्यवहार्य नहीं प्रतीत होता है इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान खाद्य और तकनीकी ग्रेड के

फॉस्फोरिक एसिड का आयात पैकड़ रूप में ही किया जा सकता है। इसके अलावा, आयातकों द्वारा प्रदत्त आयात के कुछेक दस्तावेजों और आयातकों में से एक आयातक के इस अनुरोध के आधार पर कि कोरिया गण. का निर्यातिक/आपूर्तिकर्ता पैकिंग लागत सहित निर्यातों पर भारी व्यय कर रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गण. से निर्यात पैकड़ रूप में हुए हैं।

62. आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि कोरिया गणराज्य से आयात वर्ष 2004-05 में शुन्य से जांच अवधि के दौरान 15408 मी.टन तक काफी अधिक बढ़ गए हैं। इसी अवधि के दौरान अन्य देशों से आयातों में भारी गिरावट आई है। इसके अलावा, कोरिया गण. का भारत में हुए कुल आयातों में बड़ा बाजार हिस्सा है। यह भी देखा जाता है कि 2004-05 और जांच अवधि के बीच जबकि कोरियाई आयातों का बाजार हिस्से में शुन्य से 85% तक की भारी वृद्धि हुई है, चीन जन.गण. समेत अन्य देशों से आयातों का हिस्सा 2004-05 में 100% से घटकर जांच अवधि में 15% रह गया है।

झ.3.2 मांग में बाजार हिस्सा

41. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों, अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्रियों और भारत में संबद्ध देशों के कुल आयातों पर विचार करते हुए संबद्ध वस्तुओं की घरेलू खपत/मांग का निर्धारण किया है। इस प्रकार निर्धारित संबद्ध वस्तु की मांग निम्नांकित तालिका में दी गई है:-

मांग	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
कोरिया के कुल आयात मी.ट. में	-	324	772	15,408
अन्य आयात	6,122	4,830	3,807	2,721
बिक्रियां- घरेलू उद्योग मी.ट. में	38,462	42,074	51,767	52,465
बिक्रियां-अन्य उत्पादक मी.ट. में	4,286	4,759	4,500	3,000
कुल मांग मी.ट. में	48,870	51,987	60,846	73,594
प्रवृत्ति	100	106	125	151
मांग में % बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	78.70	80.93	85.08	71.29
अन्य भारतीय उत्पादक	8.77	9.15	7.40	4.08
कोरिया जन.गण.	-	0.62	1.27	20.94
चीन	6.44	8.85	5.55	3.35
अन्य देश	6.09	0.44	0.71	0.34

64. आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में 51% तक वृद्धि हुई है। कोरिया गणराज्य से पाटित आयातों के मांग में बाजार हिस्से में 2004-05 के दौरान शून्य से जांच अवधि के दौरान 20.94% की वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा इसी अवधि के दौरान 78.70% से घटकर 71.29% रह गया है।

झ.3.3 घरेलू उद्योग के उत्पादन की दृष्टि से आयात

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य से हुए आयात भारतीय उत्पादन और घरेलू उद्योग की खपत की दृष्टि से बढ़े हैं जैसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट होता है:-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
से आयात					
कोरिया जन.गण.	मी.ट.	0	324	772	15408
उत्पादन घरेलू उद्योग	मी.ट.	39,288	45,857	49,540	51,601
अन्य घरेलू उत्पादकों का उत्पादन	मी.ट.	4,286	4,759	4,500	4,500
कुल घरेलू उत्पादन	मी.ट.	43,574	50,616	54,040	56,101
मांग	मी.ट.	48,870	51,987	60,846	73,594
निम्न की दृष्टि से कोरिया से आयात					
उत्पादन	%	-	0.64%	1.43%	27.46%
खपत	%	-	0.62%	1.27%	20.94%
घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	%	78.70	80.93	85.08	71.29

66. उपर्युक्त की दृष्टि से प्राधिकारी नोट करते हैं कि

- (i) कोरिया गणराज्य से पाटित आयातों की मात्रा में लंबी अवधि तक समग्र रूप से काफी वृद्धि हुई है।
- (ii) कोरिया गणराज्य से आयातों में भारत में उत्पादन और खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है।
- (iii) समग्र रूप से और उत्पादन तथा खपत की दृष्टि से आयातों में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है।

झ.3.4 क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग

67. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहा है:-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
क्षमता मी.ट.	50,306	50,306	50,306	50,306
सूचीबद्ध	100	100	100	100
उत्पादन मी.ट.	39,288	45,857	49,540	51,601
सूचीबद्ध	100	117	126	131
क्षमता उपयोग %	78%	91%	98%	103%
सूचीबद्ध	100	117	126	131
कुल मांग मी.ट. में	48,870	51,987	60,846	73,594
सूचीबद्ध	100	106	125	151
मांग की दृष्टि से				
उत्पादन	80.39%	88.21%	81.42%	70.12%
मांग की दृष्टि से बिक्रियां	78.70%	80.93%	85.08%	71.29%

68. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में 51% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में 31% की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने वित्तीय घाटों के बावजूद मांग में हुई वृद्धि को पूरा करने के लिए संभव सीमा तक अपने उत्पादन और क्षमता उपयोग में वृद्धि की है।

69. घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता को बढ़ाने की असमर्थता के एक कारण के रूप में सर्वप्रथम चीन जन.गण. से और अब कोरिया गण. से हुए पाटन और उसके परिणामस्वरूप प्रतिकूल निष्पादन को माना है। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि वह अवरोध निवारण के जरिए अपनी क्षमता में 15-20% की वृद्धि कर सकता है लेकिन जब वर्तमान निवेशों में भारी घाटा हो रहा है तो ऐसी स्थिति में क्षमताओं में विस्तार केवल आग में धी का काम करेगा।

70. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान क्षमता के अधिकतम उपयोग पर भी घरेलू उद्योग कम से कम अपनी उत्पादन लागत भी प्राप्त नहीं कर सका है।

झ.3.5 बिक्रियां

71. घरेलू उद्योग की बिक्रियों की मात्रा निम्नानुसार रही है :-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
बिक्रियां मी.ट. में	38,462	42,074	51,767	52,465
सूचीबद्ध	100	109	135	136
मांग मी.ट. में	48,870	51,987	60,846	73,594
सूचीबद्ध	100	106	125	151
मांग में बाजार हिस्सा %	78.70	80.93	85.08	71.29
सूचीबद्ध	100	103	108	91

72. आंकड़ों से पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्रियों में 36% तक की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में 51% की वृद्धि हुई है। मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में 2004-05 में 78.70% से जांच अवधि में 71.29% तक की गिरावट आई है। चूंकि घरेलू उद्योग क्षमता उपयोग के इष्टतम स्तर पर प्रचालन कर रहा था, इसलिए बाजार हिस्से में गिरावट मांग में वृद्धि के आसन्नवर्ती थी। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात हिस्से में भारतीय बाजार में उनके बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई है।

झ.3.6 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

73. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में भारी कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा उच्च स्तर तक बढ़ गई होती।

(i). कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

74. कीमत कटौती के निर्धारण हेतु समान ग्रेडों के फॉस्फोरिक एसिड की तुलना करके तुलनाएं की गई है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना संबद्ध देश से आयात कीमतों के आईबीआईएस आंकड़ों में बताए गए मूल्य में 1% प्रहस्तन प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क को जोड़कर की गई है।

75. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा दी गई रिवेटों, छूटों और कमीशनों तथा प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को छोड़ दिया गया है।

76. जांच अवधि के दौरान आयातित संबद्ध वस्तु के तकनीकी और खाद्य ग्रेडों के पहुंच मूल्य की तुलना करते समय कीमत कटौती का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान ग्रेडों के साथ किया गया है। भारित औसत कीमत कटौती निम्नानुसार है:-

कीमत कटौती

कीमत कटौती - जांच अवधि	तकनीकी ग्रेड	खाद्य ग्रेड	तकनीकी और खाद्य ग्रेड के लिए भारित औसत
पहुंच कीमत रूपए प्रति मी.ट.	26374	24062	26355
पैकड के लिए निवल बिक्री कीमत रूपए प्रति मी.ट.	****	****	****

कीमत कटौती रूपए प्रति मी.ट.	****	****	****
कीमत कटौती %	10-20%	20-30%	10-20%

77. कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत के साथ घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु की क्षति रहित कीमत की तुलना करके किया गया है। भारित औसत कम कीमत पर बिक्री निम्नानुसार रही है :-

कम कीमत पर बिक्री

कम कीमत पर बिक्री-जांच अवधि	तकनीकी ग्रेड	खाद्य ग्रेड	तकनीकी और खाद्य ग्रेड के लिए भारित औसत
पहुंच कीमत रूपए प्रति मी.ट.	26374	24062	26355
पैकड के लिए निवल बिक्री कीमत रूपए प्रति मी.ट.	****	****	****
कम कीमत पर बिक्री रूपए प्रति मी.ट.	****	****	****
कम कीमत पर बिक्री %	25-35%	35-45%	25-35%

78. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि पाटित आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम है और इससे घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में 15 - 30% के बीच कीमत कटौती हो रही है। पहुंच मूल्य क्षतिरहित कीमत से भी कम थे जिसके परिणामस्वरूप 25-45% के बीच कम कीमत पर बिक्री हुई है।

(ii) कीमत ह्रास और न्यूनीकरण प्रभाव:-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
बिक्री लागत (रु. प्रति मी.ट.)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	90	97	98
बिक्री कीमत (रु. प्रति मी.ट.)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	99	92	102
लाभ/हानि (रु. प्रति मी.ट.)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-19	-133	-60

/9. उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग का निष्पादन जिसमें वर्ष 2005-06 तक सुधार हो रहा था, उसमें चीन जन.गण. से मुख्य रूप से हुए आयातों के कारण वर्ष 2006-07 में गिरावट आई। वर्ष 2007-08 में चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद वर्ष 2006-07 की तुलना में 2007-08 में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ, फिर भी घरेलू उद्योग को वर्ष 2007-

08 के दौरान भारी घाटा हुआ। घरेलू उद्योग बिक्री लागत के अनुरूप बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं कर सका जिससे घरेलू कीमतों में हास का पता चलता है।

80. कोरिया गणराज्य से सीआईएफ कीमतों और संगत पहुंच मूल्य संबंधी सूचना निम्नांकित तालिका में दी गई है:-

कोरिया गणराज्य से सीआईएफ आयात कीमत		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
तकनीकी ग्रेड	रु./मी.ट	कोई आयात नहीं	24863	23382	23761
प्रवृत्ति	सूचकांक		100	94	96
खाद्य ग्रेड	रु./मी.ट	कोई आयात नहीं	28034	23306	21677
प्रवृत्ति	सूचकांक		100	83	77
औसत-तकनीकी और खाद्य ग्रेड	रु./मी.ट	कोई आयात नहीं	24866	23380	23743
प्रवृत्ति	सूचकांक		100	94	95
पहुंच मूल्य					
तकनीकी ग्रेड	रु./मी.ट	कोई आयात नहीं	28841	26538	26374
प्रवृत्ति	सूचकांक		100	92	91
खाद्य ग्रेड	रु./मी.ट	कोई आयात नहीं	32520	26452	24062
प्रवृत्ति	सूचकांक		100	81	74
औसत-तकनीकी और खाद्य ग्रेड	रु./मी.ट	कोई आयात नहीं	28845	26536	26355
प्रवृत्ति	सूचकांक		100	92	91

81. उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कोरिया गणराज्य से आयातों की सीआईएफ कीमत में क्षति अवधि के दौरान लगातार गिरावट आई है। सीआईएफ कीमतों में गिरावट और सीमाशुल्क की दर में गिरावट दोनों से आयातों की पहुंच कीमत में भारी गिरावट हो गई थी। संबद्ध वस्तु के एक प्रयोक्ता तथा आयातक मै. संदीप आर्गेनिक्स प्रा.लि., मुंबई में अपने अनुरोधों में इस बात की पुष्टि की है कि सीआईएफ कीमत में कमी और सीमाशुल्क की दर में कमी होने के कारण आयातों की पहुंच कीमत में भारी गिरावट आई है।

82. आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है। इसके परिणामस्वरूप आयातों से बजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर न्यूनकारी प्रभाव पड़ा था।

झ.4 क्षति संबंधी अन्य कारकों की जांच

83. पूर्ववर्ती खंड में मात्रा और कीमत प्रभाव की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने निम्नलिखित पैराग्राफों में अन्य अनिवार्य क्षति संबंधी मापदंडों की जांच की है।

84. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य से हुए आयात 2004-05 के दौरान शुन्य से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 15,408 हो गए हैं। घरेलू उद्योग का निष्पादन 2005-06 से जांच अवधि अर्थात् कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तु के आयातों के शुरुआत की अवधि के दौरान काफी विकृत रहा था।

झ.4.1 लाभप्रदता

85. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग को हुआ लाभ/घाटा निम्नानुसार था:-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
बिक्री की लागत (रु. प्रति मी.ट.)	****	****	****	
सूचीबद्ध	100	90	97	98
बिक्री कीमत (रु. प्रति मी.ट.)	****	****	****	
सूचीबद्ध	100	99	92	102
लाभ/हानि (रु. प्रति मी.ट.)	****	****	****	
सूचीबद्ध	-100	-19	-133	-60
पीबीआईटी लाख रुपए	****	****	****	
सूचीबद्ध	-100	25	-345	-149
निवल स्थिर परिसंपत्ति लाख रुपए	****	****	****	
सूचीबद्ध	100	100	90	103
कार्यशील पूँजी लाख रुपए	****	****	****	
सूचीबद्ध	100	127	83	129
घरेलू बिक्रियों के लिए लगाई गई पूँजी लाख रुपए	****	****	****	
सूचीबद्ध	100	108	89	110
पीबीआईटी लाख रुपए	****	****	****	
सूचीबद्ध	-100	25	-345	-149
लगाई गई पूँजी पर आय- एनएफए %	****	****	****	
सूचीबद्ध	-100	23	-389	-135

86. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में औसत बिक्री लागत में वर्ष 2004-05 की तुलना में वर्ष 2006-07 में 3% तथा जांच अवधि में 2% की गिरावट आई है। इसी अवधि के दौरान वर्ष 2006-07 में औसत बिक्री कीमत में 8% की गिरावट आई परंतु जांच अवधि में 2% की वृद्धि हुई। यद्यपि, घरेलू उद्योग चीन जन.गण. से हुए आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण जांच अवधि के कारण अपनी कीमत बढ़ा सकता था, तथापि, बिक्री प्राप्ति अभी भी बिक्री लागत से कम रही थी। इसी समय कोरिया गण. से होने

वाले आयातों की मात्रा वर्ष 2004-05 के दौरान शून्य से बढ़कर जांच अवधि में 15408 मी.ट. हो गई। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में अत्यधिक गिरावट बनी रही।

87. घरेलू उद्योग का लाभ (पीबीआईटी) 2004-05 में -100(सूचीबद्ध) से घटकर जांच अवधि में (-) 149 रह गया है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों के लिए लगाइ गई पूंजी पर आय 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान काफी कम हो गई है और जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों से आय 2004-05 के (-) 100(सूचीबद्ध) से घटकर (-) 135 रह गई है।

88. इसके अलावा प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योगस्थित वस्तु की प्रचलनात्मक उत्पादन लागत भी ग्राह्य करने में सकारात्मक रूप से जांच अवधि के चलते न केवल भारी वित्तीय घाटे हुए हैं बल्कि भारी नकद दैवाइ प्रभाव हुए हिना।

झ.4.2 नकद प्रवाह

89. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के दोनों घटक बहु उत्पाद और अनेक स्थानों वाली कंपनियां हैं। कोई भी कंपनी विचाराधीन उत्पाद के नकद प्रवाह के संबंध में पृथक सूचना नहीं रखती है। चीन जन.गण.के खिलाफ पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण जांच अवधि के दौरान नकद घाटा कम हुआ परंतु वह अब भी पर्याप्त नकारात्मक स्तर पर बना रहा जैसा कि निम्नलिखित से प्रदर्शित होता है:-

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
करपूर लाभ/हानि	लाख रुपए	****	****	****	****
घरेलू बिक्री राशि	लाख रुपए	****	****	****	****
घरेलू बिक्री राशि नकद लाभ	लाख रुपए	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	74	-241	-38

झ.4.3 रोजगार तथा मजदूरी

90. घरेलू उद्योग के रोजगार और मजदूरी के स्तर निम्नांकित तालिका में दिए गए हैं:-

	2005-06	2006-07	2007-08
रोजगार सं.	****	****	****
सूचीबद्ध	100	98	92
मजदूरी लाख रुपए	****	****	****
सूचीबद्ध	100	125	130

91. क्षति अवधि के दौरान रोजगार तथा मजदूरी के स्तर में किसी प्रतिकूल प्रवृत्ति का पता नहीं चलता है।

झ.4.4 उत्पादकता

92. घरेलू उद्योग की उत्पादकता जैसी प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में दर्शायी गई है, में उपलब्ध क्षमता के इष्टतम उपयोग के कारण क्षति अवधि के दौरान सुधार हुआ है जैसा नीचे दर्शाया गया है :-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
उत्पादन	मी.ट.	39,288	45,857	49,540	51,601
रोजगार	सं.	****	****	****	****
उत्पादकता	मी.ट.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	124	138

93. उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए उत्पादकता में कमी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है जिसमें वस्तुतः जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है।

झ.4.5 मालसूची

94. घरेलू उद्योग ने मालसूची के इष्टतम स्तर को बनाए रखा है जैसा नीचे दर्शाया गया है:-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
मालसूची मी.ट. में	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	477	600	277
बिक्री मी.ट. में	38,934	42662	51821	52483
दैनिक बिक्रियों की संख्या हेतु मालसूची (दिन)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	435	451	205

95. यह नोट किया जाता है कि माल सूची के ये स्तर काफी अधिक नहीं हैं और इन्हें क्षति का प्रभाव नहीं माना जासकता।

झ.4.6 वृद्धि

96. घरेलू उद्योग में क्षति अवधि के दौरान उत्पादन और बिक्रियों की समग्र मात्रा की दृष्टि से सकारात्मक प्रवृत्ति रही है। तथापि, जब निवेश पर आय और नकद प्रवाह समेत लाभप्रदता की दृष्टि से इसकी जांच की जाती है तो वृद्धि नकारात्मक है।

झ.4.7 पूँजी/निवेश जुटाने की क्षमता

97. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नकारात्मक लाभप्रदता और नकारात्मक नकद लाभों से घरेलू उद्योग की नई पूँजी/निवेश जुटाने संबंधी ऋण रेटिंग प्रभावित हो सकती है। तथापि, दोनों याचिकाकर्ता बहु-उत्पाद कंपनियां हैं और निवेश जुटाने की क्षमता घरेलू उद्योग पर पाठन के प्रभाव की एक संकेतक नहीं हो सकती है।

झ.4.8 पाठन की मात्रा

98. संबद्ध देश और आवेदक निर्यातक के निर्धारित पाठन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक है।

झ.4.9 कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

99. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत बिक्री लागत से कम रही है। आयातों द्वारा बिक्री कीमत में कटौती 2005-06 से लगातार जारी रही है। यह भी नोट किया गया है कि मूल सीमाशुल्क भी 2005-06 में 15% से घटकर जांच अवधि में 10% हो गया है।

झ.5 प्राधिकारी द्वारा क्षति की जांच एवं क्षति संबंधी निष्कर्ष

100. कोरिया गणराज्य से आयातों में 2004-05 में शून्य से जांच अवधि के दौरान 15,408 मी.ट. तक की भारी वृद्धि हुई है। प्रतिशत रूप में कोरिया गणराज्य से आयातों का हिस्सा भारत के कुल आयातों में शून्य से बढ़कर 85% हो गया है जबकि चीन जन.गण. समेत अन्य देशों से आयात 2004-05 में 100% से घटकर जांच अवधि में 15% रह गए हैं।

101. कोरिया गणराज्य से मांग में पाठित आयातों का बाजार हिस्सा 2004-05 के दौरान शून्य से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 20.94% हो गया है जबकि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा इसी अवधि के दौरान 78.70% से घटकर 71.29% रह गया है। घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान अपनी अधिकतम क्षमता पर प्रचालन कर रहा था और मांग में वृद्धि के साथ बाजार हिस्से में गिरावट सन्त्रिकट थी। घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता को बढ़ाने की अक्षमता का एक कारण सर्वप्रथम चीन जन.गण. और अब कोरिया गण. से पाठन तथा निष्पादन पर

परिणामी प्रभाव को माना है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि अवरोध निवारण के जरिए वह क्षमता में 15-20% की वृद्धि कर सकता है।

102. संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 51% तक की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में 31% की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने वित्तीय नुकसान के बावजूद मांग में हुई वृद्धि को पूरा करने के लिए संभव सीमा तक अपने उत्पादन और क्षमता उपयोग में वृद्धि की है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु की अपनी प्रचालनात्मक उत्पादन लागत भी प्राप्त नहीं कर पाया है जिसके चलते न केवल उसको भारी वित्तीय नुकसान हुआ है बल्कि भारी नकद घाटे भी हुए हैं। घरेलू उद्योग को क्षमता के अपने अधिकतम उपयोग के स्तर पर कम से कम अपनी उत्पादन लागत को प्राप्त करना चाहिए जो कोरिया गणराज्य से पाटित आयातों द्वारा सृजित प्रतिकूल बाजार स्थितियों के कारण उसे प्राप्त नहीं हो पाई थी।

103. कीमत कटौती 15-30% के बीच रही है और कम कीमत पर बिक्री 30-45% के बीच रही है। आयातों द्वारा बिक्री कीमत की कटौती 2005-06 के बाद से लगातार जारी रही है। यह भी नोट किया गया है कि मूल सीमा शुल्क भी 2005-06 में 15% से घटकर जांच अवधि में 10% हो गया है।

104. आधार वर्ष की तुलना में औसत बिक्री लागत में वर्ष 2004-05 की तुलना में वर्ष 2006-07 में 3% तथा जांच अवधि में 2% की गिरावट आई है। इसी अवधि के दौरान वर्ष 2006-07 में औसत बिक्री कीमत में 8% की गिरावट आई परंतु जांच अवधि में 2% की वृद्धि हुई। यद्यपि, घरेलू उद्योग चीन जन.गण. से हुए आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण जांच अवधि के कारण अपनी कीमत बढ़ा सकता था, तथापि, कोरिया गण. से आयातों की मौजूदबी बिक्री प्राप्ति अभी भी बिक्री लागत से कम रही थी जो वर्ष 2004-05 के दौरान शून्य से बढ़कर जांच अवधि में 15408 मी.ट. हो गए। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में अत्यधिक गिरावट बनी रही।

105. घरेलू उद्योग का लाभ (पीबीआईटी) 2004-05 में -100(सूचीबद्ध) से घटकर जांच अवधि में (-) 149 रह गया है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों के लिए लगाई गई पूंजी पर आय 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान काफी कम हो गई है और जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों से आय 2004-05 के (-) 100(सूचीबद्ध) से घटकर (-) 135 रह गई है। घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु की प्रचालनात्मक उत्पादन लागत भी प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है जिसके चलते न केवल भारी वित्तीय घाटे हुए हैं बल्कि भारी नकद घाटे भी हुए हैं।

106. इस प्रकार आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण से घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन में अत्यधिक गिरावट और उसे वास्तविक क्षति का पता चलता है। उष्णव्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग उत्पादन तथा बिक्री को बढ़ाने की स्थिति में था, तथापि लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का पता चलता

है। इस प्रकार उपर्युक्त जांच के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संबंध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

107. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमावली में सूचीबद्ध मापदंडों की संख्या पर विचार करते हुए इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच और निर्धारण अपेक्षित होता है। इसके अलावा, जहां नियमों में समस्त सूचीबद्ध मापदंडों की जांच और निर्धारण करने का प्रावधान है, वहीं उनमें यह प्रावधान नहीं है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में प्रत्येक मापदंड के संबंध में गिरावट आनी चाहिए। इसके अलावा, नियमों में इस बात के निर्धारण का प्रावधान है कि क्या घरेलू उद्योग के निष्पादन में इन मापदंडों के संबंध में हास या गिरावट आई है और क्या इस प्रकार की गिरावट काफी अधिक है। अतः किसी पाटनरोधी जांच में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संदर्भ में क्षति का समग्र निर्धारण विभिन्न मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन के आधार पर करना अपेक्षित होता है।

ज. कारणात्मक संबंध और अन्य कारक

108. वास्तविक क्षति की मौजूदगी और कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत न्यूनीकरण तथा हासकारी प्रभावों की दृष्टि से घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभावों, नियमावली और पाटनरोधी करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य संकेतात्मक मापदंडों की जांच इस बात की जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों के अलावा ऐसा कोई अन्य कारक है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो। तदनुसार निम्नलिखित मापदंडों की जांच की गई है:-

(i) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा और कीमतें

आईबीआईएस के आंकड़ों से यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान लगभग 85% आयात कोरिया गणराज्य से हुए थे और शेष 14% चीन जन.गण. से हुए थे जिन पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है। अन्य देशों से आयात केवल 1% हैं। अतः अन्य देशों से आयातों से घरेलू बाजार में कीमतें प्रभावित नहीं होती हैं।

(ii) मांग में संकुचन और/खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

संपूर्ण क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में स्वरूप वृद्धि प्रदर्शित होती है और इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का देश में मांग के अभाव से कोई संबंध नहीं है। खपत और मांग संबंधी आंकड़ों से उत्पाद की खपत की प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन प्रदर्शित नहीं होता है और यह घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक करण नहीं रहा है।

(iii) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

यह वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है। आवेदक संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादक हैं और घरेलू उत्पादन तथा बिक्रियों में उनका काफी हिस्सा बनता है। प्राधिकारी की जानकारी में प्रतिस्पर्धा या व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं की स्थितियों का कोई साक्ष्य नहीं आया है।

(iv) प्रौद्योगिकी में विकास

प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई खास परिवर्तन जानकारी में नहीं आया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

(v) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

घरेलू उद्योग में क्षति अवधि के दौरान कोई खास निर्यात नहीं किया है तथापि वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण केवल घरेलू बिक्रियों के लिए किया गया है इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति के विश्लेषण में निर्यात निष्पादन पर विचार नहीं किया गया है अतः निर्यात निष्पादन को घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला कारक नहीं माना जा सकता है।

(vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है अतः यह घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकती है।

109. उपर्युक्त अनुत्तरदायी कारकों के विश्लेषण से पता चलता है कि पाटित आयातों के अलावा किसी अन्य ज्ञात कारक से घरेलू उद्योग प्रभावित नहीं हुआ है।

ज .1 कारणात्मक संबंध सिद्ध करने वाले कारक और कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

110. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन के विश्लेषण से पता चलता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक रूप से विकृति आई है। अतः पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध होता है :-

क. संबद्ध देश से पाटित आयात की मात्रा में क्षति जांच अवधि के दौरान काफी कम कीमतों पर तेजी से वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप भारी कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में वृद्धि की तर्ज पर अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर पाया है जिसके कारण वित्तीय नुकसान हुआ है।

ख. पाटित कीमतों पर कोरिया गणराज्य के बाजार हिस्से में वृद्धि से प्रतिकूल बाजार स्थितियां सृजित हुई हैं और इनसे घरेलू उद्योग पर कीमत संबंधी दबाव पड़ा है और इनसे घरेलू उद्योग अपनी क्षमता के अधिकतम उपयोग के स्तर पर भी कम से कम अपनी उत्पादन लागत भी प्राप्त नहीं कर सका है।

ग. कोरिया गणराज्य से पाटित आयातों के कारण घरेलू कीमतों में काफी कमी आई है जिससे कंपनी के लाभों, नकद प्रभाव और निवेशों पर आय बुरी तरह प्रभावित हुए हैं।

111. अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है और घरेलू उद्योग को हुई क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

ट. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

112. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित फास्फोरिक एसिड के तकनीकी और खाद्य ग्रेड के लिए प्राधिकारी द्वारा यथानिर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध देश से हुए निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। संबद्ध देश से हुए निर्यातों की भारित औसत पहुंच कीमत और क्षति मार्जिन निम्नानुसार परिकलित किए गए हैं:-

क्षति मार्जिन-जांच अधिकारी	तकनीकी ग्रेड	खाद्य ग्रेड	तकनीकी और खाद्य ग्रेड का औसत
पहुंच कीमत अम.डॉ/मी.ट.	647	590	647
एनआईपी (पैकड) अम.डॉ/मी.ट.	****	****	****
क्षति मार्जिन अम.डॉ/मी.ट.	****	****	****
क्षति मार्जिन %	35-45	65-75	35-45

ठ. निष्कर्ष

113. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों और किए गए अनुरोधों तथा प्राधिकारी के समक्ष इन जांच परिणामों में यथाअभिलेखित उपलब्ध कराए गए तथ्यों की जांच करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :

क. संबद्ध देश से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात निर्यातक देश के घरेलू बाजार में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमतों पर किया गया है।

ख. संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन काफी अधिक है और निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ग. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को हुई यह क्षति संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रात्मक एवं कीमत, दोनों प्रकार के प्रभाव के कारण हुई है।

घ. अतः प्राधिकारी संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।

ड भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

114. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल करना सुकर बनाया जा सके ।

115. प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से सभवतः संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है तथापि, इन पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कोई कमी नहीं आएगी । इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन की प्रथाओं द्वारा मिलने वाले अनुचित लाभ समाप्त होंगे और घरेलू उद्योग का हास रुकेगा तथा उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु की व्यापक विकल्पों की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद मिलेगी ।

ढ. सिफारिशें:

116. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच की शुरुआत को सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था और निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के विभिन्न पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया था । निर्धारित नियमावली के अनुसार पाटन, क्षति और पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच करने के बाद और संबद्ध देश के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन के निर्धारण के बाद और इस निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद कि घरेलू उद्योग को ऐसे पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है, प्राधिकारी की यह राय है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को रोकने के लिए पाटनरोधी उपाय लागू करना अपेक्षित है ।

117. अतः प्राधिकारी नीचे वर्णित ढंग और पद्धति से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना आवश्यक समझते हैं और उसकी सिफारिश करते हैं ।

118. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले अपेक्षाकृत कम शुल्क को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में से कमतर के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं । तदनुसार कोरिया गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाले फास्फोरिक एसिड के सभी ग्रेडों और सभी सांद्रणों (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) के आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की जाती है ।

शुल्क तालिका

सं.	उप-शीर्ष	वस्तु विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	नियात का देश	उत्पादक	नियातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	2809 - 2010	फॉस्फोरिक एसिड	सभी ग्रेड और सांद्रण (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)	कोरिया गण.	कोई	कोई	कोई	221.64	मी.ट.	अम.डॉ.
2.	-वही-	-वही-	-वही-	कोई	कोरिया गण.	कोई	कोई	221.64	मी.ट.	अम.डॉ.

119. उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी दिनांक 22 जून, 2009 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

120. केन्द्र सरकार द्वारा इन जांच परिणामों को स्वीकार किए जाने के बाद इनके खिलाफ कोई अपील वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ नियमावली, 1995 के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)
NOTIFICATION

New Delhi, the 11th November, 2009

FINAL FINDINGS

Sub: Anti-Dumping Investigation concerning imports of Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade) originating in or exported from Korea RP.

No.14/07/2007-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995(hereinafter referred to as AD Rules), thereof:

2. WHEREAS M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Limited and Solaris Chemtech Limited,, (herein after referred to as the applicants) have filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade) (hereinafter referred to as the subject goods), originating in or exported from Korea RP (hereinafter referred to as subject country).and requested for initiation of an investigation for levy of anti dumping duties on the subject goods.

3. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants issued Initiation Notification of even number dated 12th November 2008, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

4. AND WHEREAS, the Authority notified its preliminary findings vide Notification dated 24th April 2009 recommending provisional anti-dumping duty on import of subject goods from the subject countries and acting upon such recommendations of the

Authority, the Department of Revenue, vide its notification No 74/2009-Customs dated 22nd June 2009 imposed provisional anti-dumping duty on the subject goods.

A. PROCEDURE

5. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:

- i) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigations in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules.
- ii) The Authority provided copies of the non confidential version of the application to the known exporters and the Embassy of subject country in accordance with Rules 6(3) supra.
- iii) The Authority forwarded a copy of the Initiation Notification to the known exporters from the subject country, importers and domestic industry as per the addresses made available by the applicant and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the Initiation Notification.
- iv) No response has been received from any producer/ exporter of Korea RP within the prescribed time limit. However a response has been received from M/s DC Chemicals Co. Ltd., Korea RP dated 4.2.2009 received on 19.2.2009, after prescribed time limit and the same has been found incomplete and accordingly the said producer/ exporter has been treated as non-cooperative for the purpose of this investigation.
- v) The Authority forwarded a copy of the Initiation Notification to all the known importers (whose names and addresses were available with the authority) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(4).
- vi) Comments on initiation notification have been received from the following interested parties, which have been dealt with at appropriate place in the findings:
 - a. Star Chemicals (Bombay) Pvt. Ltd., Mumbai
 - b. The Fertiliser Association of India, New Delhi
 - c. Hindustan Unilever Limited
 - d. Madras Fertilisers Limited, Chennai
 - e. Sandeep Organics Pvt. Ltd., Mumbai

- vii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- viii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigations. The information received from DGCI&S shows that it had not captured the total imports of the subject goods during the period of investigation therefore data from IBIS has been relied upon in this preliminary findings.
- ix) Information was sought from the applicant and other domestic producers also. The Non-injurious Price based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) has worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry;
- x) The Designated Authority sent copies of preliminary findings dated 24th April 2009 to all known interested parties including, the responding importers and users of the subject goods, Embassy of the subject country in India, and the domestic industry and invited the comments of the interested parties on the preliminary findings. Parties to this investigation were requested to make their views known in writing within 40 days (or extended period) of the notification of preliminary findings.
- xi) The comments of the interested parties in response to the preliminary findings have been taken on record and have been discussed in appropriate sections of the findings.
- xii) The Authority held a public hearing on 11.08.2009 to provide an opportunity to all interested parties to present their view. Oral submissions made by the parties during the public hearing reproduced in writing have been taken on record for the purpose of this investigation.
- xiii) In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 3rd November 2009 and comments received thereon have also been duly considered in the findings.
- xiv) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

- xv) The Period of Investigation covers the period starting from 1st April 2007 to 31st March 2008 (12 months). The examination of trends in the context of injury analysis covers the period from April 2004 - March 2005, April 2005 – March 2006 and April 2006 – March 2007 and the POI.

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY.

6. The views expressed by various interested parties have been discussed in the preliminary findings and also in the disclosure statement. The views which have not been discussed earlier in the preliminary findings and those raised in the disclosure statement and in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paragraphs herein below to the extent these have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paragraphs herein below.

7. Subsequent to the preliminary findings, the following interested parties have made submissions:

- i. Domestic Industry
- ii. Vasu Chemicals, Mumbai, Importer
- iii. Sandeep Chemical Corporation, New Delhi – Importer
- iv. Hindustan Unilever Limited
- v. Bohrim Industry Corp., South Korea
- vi. Sebit Chem Co. Ltd., South Korea
- vii. Canko Marketing Inc., South Korea
- viii. MetaChem, South Korea

8. Subsequent to public hearing, the submissions were received from the following:

- i. Domestic Industry
- ii. A. Choksey Chemical Industries, Mumbai
- iii. M/s Sandeep Organics Pvt. Ltd., Mumbai
- iv. Hindustan Unilever Limited
- v. M/s Sebitchem Co. Ltd., South Korea
- vi. M/s Kwang Jin Chemical Co. Ltd., Korea
- vii. Bohrim Industry, South Korea
- viii. Canko Marketing Inc., South Korea
- ix. BR Corporation, South Korea

9. The submissions made by various interested parties that had been dealt with in the preliminary findings are not being repeated here for the sake of brevity. Following disclosure statements, the following interested parties have submitted their comments within the time period:

- (i) M/s Bohrim Industry, South Korea
- (ii) M/s Borim Industry South Korea
- (ii) M/s Canko marketing, South Korea
- (iv) M/s Kwang Jin Chemical Co Ltd. South Korea
- (v) M/s Br Corporation., Korea RP
- (vi) M/s Sebit Chem, Korea RP
- (vii) Hindustan Lever Ltd.
- (viii) Domestic industry
- (ix) M/s A Choksey chemical industry

Subsequent to the issuance of disclosure statement, various interested parties i.e importers, exporters and domestic industry have submitted their comments which have been analysed at appropriate headings in this findings. Various importers and exporters have reiterated their earlier submissions with regard to product under consideration, domestic industry standing and injury parameters. The domestic industry has requested the authority to confirm dumping margin and injury margin and has also requested the Authority to fix duty in US \$ because of depreciation of US\$.

C. Product under consideration and like article

10. The product under consideration in the present investigation is Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade). Phosphoric Acid is used for the production of sodium phosphate, calcium phosphate, magnesium phosphate, ammonium phosphate, pharmaceutical applications, beverages, seed processing, sugar juice and sugar refining, food phosphate manufacturing, etc.

11. Phosphoric Acid is an inorganic chemical classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act and subheading number 2809.20 of Indian Trade Classification (based on harmonized commodity system). The custom classification for all forms /grades /types of Phosphoric Acid is same. There are no restrictions on imports of Phosphoric Acid, as the product does not fall under restricted list. The product can be imported freely from any country in any quantity.

12. The applicants have claimed that there is no known difference in product produced by the participating companies and exported from Korea RP. Both products

have comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification, etc. It has been claimed by the domestic industry that comparison of essential product properties in respect of domestic product and imported product show that the subject goods produced by the domestic industry are similar to the subject goods imported from subject country in terms of essential product properties. The phosphoric acid produced by the domestic industry are like article to the subject goods imported from Korea RP.

C.1. Views of other interested parties on Product under Consideration

13. The importers and users of the subject goods in India made the following submissions:

14. Vasu Chemicals, Mumbai.

i. The Indian and imported material are different in specifications mainly with the presence of Acetic Acid in imported material and also varies in ppm level with respect to other impurities.

15. M/s Sandeep Organics Pvt. Ltd., Mumbai

i. The goods produced by the domestic industry are not technically and commercially substitutable to the imported product under consideration. Therefore, the products produced by domestic industry should not be treated as 'like article' to the goods imported from Korea RP.

ii. LCD manufacturers in South Korea use pure Phosphoric Acid as raw material & then reprocess the phosphoric acid recovered in the process. The recovered, recycled, non-pure & reprocessed grade is different from the Pure form. The domestic producers in India produce pure form.

iii. The Korean phosphoric acid is of very high acetic content and the removal of the same involves very high cost. The high cost of such removal and the compromise in quality has to be factored into the landed cost to arrive at the effective and real cost of such imports from Korea.

iv. Fertiliser grade is green in colour while technical & food grade is colourless.

v. Korean Material is not used in Pharmaceuticals, phosphate sales & food (beverages & sugar) industries. It is used in textiles, electroplating & paper industry).

16. A. Choksey Chemical Industries, Mumbai

- i. Because of anti-dumping duty on Phosphoric Acid, the cost of production of various phosphate salts has increased as seen from the comparison of the cost of production of Phosphate salt if indigenous phosphoric acid is used vis-à-vis imported phosphoric acid.

17. Vasu Chemicals, Mumbai

- i. There are number of applications where Korean Phosphoric Acid can easily be used and thus allowing Indian Manufacturers to keep their cost of final products in control in the parity of world formulation.

18. M/s Economic Law Practice, Mumbai on behalf of M/s Hindustan Unilever Ltd.

- a. The scope of the product under consideration includes technical and food grade. The Industrial Users in their production of the detergent i.e. Surf Excel bar specifically requires Pure Phosphoric Acid. Post the Period of Investigation; the Industrial Users due to non-availability of this grade by the Petitioners were forced to look at the viable source of this product from Korea RP.
- b. The Industrial Users has imported "spent phosphoric acid" which is recovered, recycled and reprocessed impure phosphoric acid having acetic acid of 3%. This impure phosphoric acid is a by-product of the manufacturing process of Liquid Crystal Display. Once the product is imported into India, the Industrial Users engage a job worker to convert the spent phosphoric acid into pure phosphoric acid by removing the impurities. The DGAD should therefore exclude from the purview of this investigation the grade used by the Industrial User which is clearly not a 'like article' as it does not have the physical / chemical characteristics / end user capabilities of the pure phosphoric acid as sourced from the Petitioners in the normal course.
- c. If the DGAD does consider it to be within the scope of the investigation, while conducting the injury analysis should factor in the prices of the imported "spent phosphoric acid" and the reprocessing charges to compare with the grades allegedly injuring the Petitioners in the domestic market.

19. M/s Sandeep Chemical Corporation, New Delhi made the similar submissions on product under consideration as made by the exporters, as shown in the para 21 below:

20. The following exporters from South Korea made their submissions first time after the Preliminary Findings:

- i. Bohrim Industry Corp., South Korea
- ii. Sebit Chem Co. Ltd., South Korea

- iii. Canko Marketing Inc., South Korea,
- iv. MetaChem, South Korea

21. All of the above exporters from Korea RP have made the similar submissions; as shown below:

- i. Technical grade is actually re-cycled/ recovered/ impure/ re-processed grade.
- ii. LCD manufacturers in South Korea imports Phosphoric Acid from China and use it in their manufacturing process. They recover phosphoric acid from its process and then sell it to exporters. It contains impurities such as Acetic Acid & Arsenic contents. It is not used in many industries.
- iii. There is difference in the parameters such as physical, chemical characteristics, manufacturing process & technology, use of raw material, function & use of products, specifications, pricing, distribution & marketing. For example, fertilizer grade is green in colour while, Korea exports colourless material.
- iv. The material is not used in pharmaceutical, phosphate salts & food (beverage & sugar) industries. It is used in textiles, electroplating & paper industry.

C.3. Examination by the Authority

22. The Authority notes that the item description in majority of import transactions of subject goods from Korea RP is Phosphoric Acid (Technical Grade) or Phosphoric Acid (Food Grade). The import documents provided by the importers also shows the import of Technical grade of phosphoric acid from Korea RP.

23. The exporters & importers have compared fertilizer grade - Phosphoric Acid with the Phosphoric Acid of Korean origin. The Authority notes that such comparison is not relevant to the investigation since the Fertiliser Grade phosphoric Acid is not covered under product under consideration.

24. Some of the importers have provided the test analysis Report showing that the technical grade phosphoric acid imported from Korea RP contains min 85% concentration of Phosphoric Acid. The Authority notes that the domestically produced technical grade phosphoric acid also contains minimum 85% concentration of Phosphoric Acid.

25. As regards the claim of high acetic acid content in the technical grade phosphoric acid imported from Korea, removal of which involves additional cost, the Authority notes that:

- a. As per the analysis reports enclosed with these submissions, the acetic acid content are lower than the Korean standards for the same;
- b. M/s Hindustan Unilever Ltd. claiming high acetic content has not imported the subject goods during the POI. Other importers who have claimed the high acetic acid content have not indicated the quantity imported by them during POI.

Similarly the exporters claiming the high acetic content have not mentioned the quantity exported by them during the POI. The Authority notes that the claim of high content of acetic acid by the importers who have not imported the subject goods and by those without indicating their import volume do not establish that the total imports of approx. 15,000 MT from Korea during POI were of high acetic content. Further, there is no evidence provided by any interested party that acetic acid content in the imported product was higher than the standards/permissible limits mentioned by one of the exporter itself.

- c. The claim of M/s Hindustan Unilever that Post POI, they have imported spent phosphoric acid has not been substantiated. Even when the company has claimed to have imported the product under consideration post POI, the company has not provided any evidence that the same was described as "spent phosphoric acid". Further, the transaction wise information on imports available with the Authority (made available by the IBIS and DGCI&S) and documents made available by various interested parties also does not show the nomenclature of the subject goods as "spent phosphoric acid". Further, their claim that they are converting the imported material to pure phosphoric acid by removing impurities is also unsubstantiated. The Authority considers that neither the claim of higher impurities is established, nor the additional processing by the importers is established.

26. As regards the submissions by some of the Indian importers and Korean exporters that Korean Material is not used in Pharmaceuticals, phosphate salts & food (beverages & sugar) industries, the Authority notes that all the importers/ exporters who have given the submissions are dealing in the Technical grade Phosphoric Acid, whereas the Pharmaceuticals & food industries use food grade phosphoric acid. With respect to Phosphate salts, the Authority notes that one of the user and importer has given the comparison of the cost of production of Phosphate salt if indigenous phosphoric acid is used vis-à-vis imported phosphoric acid. It therefore appears that they are using phosphoric acid imported from Korea RP in the production of Phosphate Salts. Further, one of the importer has stated that there are number of applications where Korean Phosphoric Acid can easily be used. In any event, the Authority notes that the fact that the product is used in several applications and the fact that the imported product from Korea is used in limited application is irrelevant so long as the domestic industry is producing and supplying the product for the same functions & uses. None of the interested parties have disputed that the domestic industry is producing and supplying phosphoric acid for the same functions & uses for which the imported product has been used.

27. After due examination of the submissions made by the interested parties and the facts available on record, the Authority confirms the product under consideration as considered in the preliminary findings and notes that the goods produced by the domestic industry are technically and commercially substitutable to the imported product under consideration. The two are comparable in terms of product specifications, physical and

chemical properties, functions and uses, pricing and customs classification. The goods produced and supplied by the domestic industry are technically and commercially substitutable to the imported goods. The goods produced by domestic industry are therefore being treated as 'like article' to the goods imported from Korea RP.

D. Domestic industry

28. The application has been filed by the two domestic producers of the subject goods, i.e. M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Limited and M/s Solaris Chemtech Limited. The Authority notes that there are three other producers of subject goods in India, i.e., M/s Star Chemicals, Mumbai, M/s STS Chemicals, Mumbai and M/s Punjab Chemicals and Crop Protection Ltd.

29. The domestic industry has submitted in their application that the production of M/s STS Chemicals shall not be included while determining the standing of the domestic industry, as they are not producing subject goods from basic stage and are procuring the subject goods in technical grade from the applicants and converting it into food grade.

30. Subsequent to Initiation, M/s Star Chemicals (Bombay) Pvt. Ltd., one of the domestic producers other than the applicants have opposed the petition for imposing anti-dumping duties against the import of Phosphoric Acid (excluding agricultural/ fertiliser grade) of all grades and concentrations from the subject country. They have submitted that reasonable degree of competitive pressure should remain on the domestic industry, from imports from Korea. They have further submitted that their submission is made only in the interest of the consumers/ end users at large, inspite of the fact that they as a manufacturer of Phosphoric Acid would also get affected.

31. M/s Punjab Chemicals and Crop Protection Ltd, who are also one of the domestic producer of the subject goods have provided their support to the petition before the initiation of the investigation. They have stated that it is very essential to impose anti-dumping duty against the import of subject goods from the subject country, otherwise, the applicant companies and M/s Punjab Chemicals and Crop Protection Ltd. will become sick and it will badly affect all the employees of the companies.

32. After taking into account the production of all the known producers of the subject goods in the Country (excluding M/s STS Chemicals), the Authority notes that the applicants commands more than 50% of the production of the subject goods in India (91% of the total production) and holds that for the purpose of this investigation the applicants M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd. and M/s Solaris Chemtech Ltd. command the standing in terms of Rule 5(3) and constitutes the domestic industry in terms of Rule 2(b).

E. De Minimis Limits

33. As per the import data received by the Authority from IBIS, as well as from DGCI&S, the imports from subject country are above the de minimis level.

F. Confidentiality

34. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. In this findings, the data of the domestic industry concerning capacity, production and sales and imports data have not been kept confidential. The data of domestic industry in respect of customers, cost, prices and the data that would give competitive advantage to their competitors have been kept confidential. The other information has not been considered as confidential unless the responding party has given sufficient justification for keeping the information as confidential.

35. Post Preliminary Findings and Public Hearing, M/s ELP, Advocates representing M/s Hindustan Unilever Ltd. submitted that excessive confidentiality has been claimed by failing to provide data related to volume of imports for the two distinct grades of phosphoric acid. The Authority after examining the claim has disclosed the imports data separately for the Technical Grade and food grade in this findings.

G. Other submissions and issues raised.

G.1. View of Domestic Industry

36. The domestic industry made the following submissions:

- i. Present petition is 3rd petition for the same product. DA earlier conducted investigation against China and recommended imposition of duty.
- ii. None of the exporters from Korea RP have responded to the questionnaire issued by the Authority.
- iii. The production of domestic industry accounts for more than 50 per cent of the total Indian production. Thus, petitioners account for “a major proportion in total eligible Indian production”. Thus the petitioners command the standing in terms of Rule 5(3) and constitute the domestic industry in terms of Rule 2(b).
- iv. Since none of the exporters from Korea RP have responded to the questionnaire issued by the Authority, the normal value may be determined for the subject goods in Korea RP considering constructed cost of production including selling, general and administrative overheads and reasonable profit.
- v. Considering the normal value and export price dumping margins works out not only significant, but also substantial.
- vi. The transaction-wise import data does not show that Spent Phosphoric Acid was the product imported in the POI.

G.2. Views of Users and Importers

37. M/s Economic Law Practice, Mumbai on behalf of M/s Hindustan Unilever Ltd. have made the following submissions other than those dealt with at relevant places in this findings:

- i. DGAD has chosen a POI, which expires nearly eight months before the initiation of the investigation. By failing to choose the POI close to the date of initiation, the DGAD has failed to rely on 'positive evidence' that can clearly show that the domestic industry is currently suffering injury or a threat of injury is existing at this point of time because of dumped imports.
- ii. The IBIS which covers limited ports shows higher imports than DGCIS which covers more ports than the IBIS sources. The methodology by which this data has been analyzed and relied upon has been kept confidential. This seriously impedes the ability of the interested parties to make submissions.
- iii. As the price of detergents is very sensitive to price of Phosphoric Acid, the anti-dumping duty would have a pernicious effect on the public interest through rise in price of detergents. The anti-dumping duty is used as a negotiation tool for artificially hiking the product price even in absence of any injury whatsoever.
- iv. The effects of volatile raw material as linked with the phosphoric acid clearly has an impact on the Industrial user, therefore the DGAD should re-consider to recommend the duties on reference price basis as compared to fixed duties. The fixed anti-dumping duties being enjoyed by the domestic industry have been built into their price, thus enabling them to enjoy unreasonably high margins at the cost of the user industries.
- v. Although no exporters from Korea RP have co-operated, the present incapacity of the Petitioners to meet Indian demand should be considered in larger community interest of the nation.

38. **M/s Vasu Chemicals, Mumbai:**

- a. Indian manufacturers have created the artificial shortage of Phosphoric Acid by making price cartel.
- b. Technical Phosphate Acid was imported from Korea and hence the prices of Indian manufacturers went downwards, which are still higher than what is available through imports.
- c. If anti-dumping duty is imposed on the Korean material, then the Indian manufacturers will take further advantage and again increase prices for their own benefit by making other users expensive.

39. **M/s Sandeep Organics Pvt. Ltd., Mumbai**

- i. The landing cost of imports of Phosphoric Acid has become cheaper. Thus, the domestic/ local producers/ manufacturers have become non-competitive. If the anti-dumping department brings in anti-dumping duty on imports of

- ii. Phosphoric Acid, it will conflict with the basic idea/ purpose to reduce the basic duty on imports.
- iii. If the anti-dumping duty is not removed/ abolished, we will contact Finance Ministry, we will approach Parliament, we report this to News Agencies.
- iii. The local manufacturers/ producers deal in many products. They may have suffered loss due to manufacturing of other products (& not Phosphoric Acid). The Local /Domestic Manufactures /Producers wanted to create a Monopoly. They are not competitive in this Global Market. If anybody complains to WTO (WORLD TRADE ORGANISATION) & NATO (NORTH ATLANTIC TREATY ORGANISATION) it will become an international issue, How come the Local / Domestic Producers / Manufacturers want Anti Dumping & Safeguard Duties on imports of all the products? Even after adding marine freights (international transportation), imports are cheaper than the Domestic / Local prices. The financial positions of local/ domestic producers are sound, good & competitive. Why local/ domestic manufacturers are manufacturing in spite of losses? They should close down their business.
- iv. The increase in imports from Korea is not on account of the dumped prices, but instead, is because domestic manufacturers have been unable to provide adequate supply of phosphoric acid. Their exists gap between the local demand and supply. The domestic manufacturers are using this shortfall in the supply to increase the prices of Phosphoric Acid. Therefore, the injury to the domestic industry is purely self-inflicted and has no connection with the alleged dumping of phosphoric acid.
- v. The in-competitiveness of local/ domestic producers/ manufacturers will be reported to BSE, NSE & SEBI.
- vi. Many authorized agents of local domestic producers/ exporters are importing phosphoric acid from Korea RP.
- vii. Due to Recession, the prices of phosphoric acid from Korea RP have reduced from USD 1800 to USD 450 PMT cif NAVA SHEVA sea port. Both decline in CIF price and the decline in rate of Customs duty triggered a substantial reduction in the landed price of imports.
- viii. People are clearing anti-dumping material without paying anti-dumping duty by clearing under DFIA license (Duty Free Import Authorization) of Leather & Sugar & under DFRC. So, there won't be any impact of anti-dumping.
- ix. Phosphoric Acid comes in different packing, e.g., bulk (in isotanks), loss (20 kg to 330 kgs.), etc. The prices varies accordingly. This should be considered while deciding on anti-dumping duty.
- x. Phosphoric Acid is coming from other countries also. Why only Korea RP is targeted and not other countries.
- xi. Given the multitude of application of phosphoric acid in foods, detergents, chemicals, medicines, etc., the imposition of any-anti-dumping duty on all imports from Korea will directly result in escalation in prices of many end products which uses it as a raw material.
- xii. There is protection of Essential Act under the fundamentals & Constitution of India. Anti-dumping can be challenged under this Act.

- xiii. Under the fundamental of Natural Justice, response of M/s DC Chemicals Co. Ltd., Korea RP should be considered even though it is incomplete or filed later.
- xiv. Why Merchant/ Fertiliser/ Agriculture grade is exempted?
- xv. Why production of M/s STS Chemicals shall not be included while determining the standing of the domestic industry?
- xvi. In the interest of the consumers/ end user at large, no ADD be levied on imports from Korea in the larger interest of the consumer.
- xvii. The anti-dumping department should consider the following components while deciding on the costs:
 - a. Local domestic producers: Excise/ Modvat/ Gatepass, Sales Tax, Agent's Discount/ Rebate/ Commission
 - b. Exporter/ Supplier of Korea RP: Packing Cost, Financing Cost, Exporter Margin, Freight, Agent, Indentor Commission/ Brokerage, Clearing Charges on Import & Export, Documentation Charges, Excise Duty, SAD Duty, Handling Charges, Sales Tax.
- xviii. Sale price should be compared instead of cost.
- xix. Effect of anti-dumping from China should be considered.
- xx. Trade restrictive practices by local/ domestic producers/ manufacturers..
- xxi. Imports continue even after levy of anti-dumping duty.
- xxii. Phosphoric Acid is also used in other industries.
- xxiii. Fertiliser grade is green in colour while technical & food grade is colourless.
- xxiv. Reduction in sales of domestic producers may be due to reduction in excise duty.
- xxv. Questionnaires should have been sent to many parties (importers, exporters, manufacturers, embassies, trade unions, etc).
- xxvi. India & South Korea has signed free trade pact recently. Anti-dumping will hamper relationship between these two countries.
- xxvii. South Korea will retaliate in the same way by bringing anti-dumping on exports from India.

40. A. Choksey Chemical Industries, Mumbai

- i. Because of anti-dumping duty on Phosphoric Acid, the cost of production of various phosphate salts has increased. The company has provided a comparison of the cost of production of Phosphate salt if indigenous phosphoric acid is used vis-à-vis imported phosphoric acid.
- ii. The consumers of Phosphate salts have started procuring their requirements by importing Phosphate salts since the imported material is very cheap. Thereby, our business is lost.
- iii. The total production capacity of Indian Manufacturers is comparably very meager than actual requirement for consumption in India. In prevailing Indian market, there will always be inflationary condition and Indian consumers of phosphoric acid cannot compete in Global market.
- iv. Majority of Phosphate industry falls under small scale industry.

- v. Production of Phosphate Salts with phosphoric acid 85% manufactured by Indian Company is not at all economical and there is every fear of collapsed of SSI Sector.
- vi. Ministry of Commerce & Industry shall interfere effectively in the interest of Indian Economy with available controlling tool against dumping of phosphate salts mainly Sodium Hexamite Phosphate 68% from China.

41. Sandeep Chemical Corporation, New Delhi

- i. Price varies according to concentrations, percentage, packing & grades.
- ii. Prices & profit of local manufacturers increased. Their market share decreased due to their high prices.
- iii. South Korea market share increased as the end user/ consumer changed their manufacturing process so that South Korea material can be accepted. They tried to reduce acetic acid contents.
- iv. Finance Ministry reduced import basic duty to 5% so as to increase the import of Phosphoric Acid. This decision was taken in the budget so as to make imports viable.
- v. Exporters of South Korea export under Chapter Head 2809201090. Indian customs classifies under Chapter head 28092010.
- vi. Local manufacturers are stocking & holding the material so as to create shortage in the market resulting increase in the price. They are not competitive. They get incentives.
- vii. Current imports are not viable from China & South Korea. South Korea has exported more due to recession and change/ fluctuation in their currency.
- viii. In South Korea, traders are exporting the material. So, there is margin of traders, indentor's commission, finance cost, credit cost, local administrative cost also. We request you to reduce the amount of anti-dumping duty.

G.3. Views of Exporters

42. Exporters from South Korea, namely M/s Bohrim Industry Corp., M/s Sebit Chem Co. Ltd., M/s Canko Marketing Inc., and M/s MetaChem made the following submissions:

- a. Price varies according to concentrations, percentage, packing & grades.
- b. Prices & profit of local manufacturers increased. Their market share decreased due to their high prices.
- c. Finance Ministry reduced import basic duty to 5% so as to increase the import of Phosphoric Acid. This decision was taken in the budget so as to make imports viable.

- d. Local manufacturers are stocking & holding the material so as to create shortage in the market resulting increase in the price. They are not competitive. They get incentives.

G.4. Examination by the Authority

43. Regarding issues raised by interested parties with respect of injury, the Authority notes that injury have been analysed on the basis of verified data of the domestic industry.

44. As regards the sensitivity of price of detergents to the price of Phosphoric Acid, the Authority notes that the user industry has neither established its claim of adverse impact, nor the legal provisions under which the same should be considered and addressed.

45. As regards the impact of anti-dumping duty on the availability of imported product in India to fill in the gap of demand and supply, the Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers. Nor would imposition of anti dumping duty result in pricing increasing beyond what has been considered reasonable & fair, given that the quantum of anti dumping duty is being restricted to the extent of injury.

46. The submission has been made that effects of volatile raw material as linked with the phosphoric acid clearly has an impact on the Industrial user, therefore the DGAD should re-consider to recommend the duties on reference price basis as compared to fixed duties. The Authority notes that the interested parties have not established how reference price would address dumping and consequent injury. In fact, given that the prices of inputs are volatile, anti dumping duty in the form of reference price does not appear reasonable and fair in addressing injurious dumping.

47. As regards selection of the POI, it is noted that the investigations were initiated based on the sufficient evidence provided by the domestic industry and in accordance with the anti-dumping rules. The Authority has carried out an objective examination of alleged dumping and consequent injury to the domestic industry. As regards choosing the POI, which expires nearly eight months before the initiation of the investigation, the Authority notes that there is no legal requirement to not to consider the time gap of 8 months between POI and initiation of investigation.

48. The Authority notes that one of the Indian importers/users has admitted that that the landed cost of imports has become cheaper. Another importer/user has stated that both decline in CIF price and the decline in rate of customs duty triggered a substantial

reduction in the landed price of imports, which clearly establishes the contention of the domestic industry that the imports are undercutting the prices in the domestic market.

49. As regards the submission that many authorized agents of local domestic producers/ exporters are importing phosphoric acid from Korea RP, the Authority notes that the import of subject goods by any agent of domestic industry does not establish that the imports have not caused injury. On the contrary, the fact that authorized agents themselves are dealing in imported phosphoric acid establish that the imports are likely to cause injury to the domestic industry.

50. It has been submitted by the importers that the Exporter/ Supplier of Korea RP are incurring a lot of expenses on exports, e.g., Packing Cost, Financing Cost, Exporter Margin, Freight, Agent, Indentor Commission/ Brokerage, Clearing Charges on Import & Export, Documentation Charges, Handling Charges, Sales Tax, etc. The Authority notes the dumping margin is required to be determined at the same level of trade. The importers have admitted that the landed cost of imports has become cheaper inspite of all these expenses.

H. Determination of Dumping Margin

H.1. Normal Value

51. The only responding exporter from Korea RP, M/s DC Chemical Co. Ltd. has not provided any information on the domestic selling prices and cost of production of subject goods in Korea RP. Moreover, in view of grossly inadequate response and that too after the prescribed time limit, M/s DC Chemical Co. Ltd. has been treated as non-cooperative for the purpose of this investigation. The Authority has therefore proceeded to determine the normal value on the basis of best facts available as per Rule 6(8) of the Anti dumping rules. The Authority has determined normal value for the subject goods in Korea RP considering the raw materials for manufacture of Phosphoric Acid at the international prices, the consumption norms, conversion cost and selling, general and administrative overheads of the domestic industry and a reasonable profit. The constructed normal values of Phosphoric Acid in packed form for all producers and exporters from Korea RP are determined as under:

Grade of Phosphoric Acid	Packed (USD/MT)
Technical Grade	***
Food Grade	***
Weighted Average	***

H.2. Export price

52. The Authority notes that the information received from DGCI&S has not captured all the import transactions in the codes dedicated for the subject goods and therefore determined export price for the period of investigation as per the transaction-wise details of imports provided by the IBIS. No exporter from Korea RP has cooperated in the investigation. Therefore, for the purpose of this findings, the data of imports as reported in India in IBIS data have been relied upon. The imports regarding agriculture/fertilizer have not been taken into consideration for determining the export prices. The imports data were further segregated for food and technical grades. From the export data, it has also been noticed that imports of Phosphoric Acid (Food and Technical Grade) are in small consignments ranging from few Kgs. to 137 MT during POI, which can come only in packed form. Further, based on the submission of one of the importers that the Exporter/ Supplier of Korea RP are incurring a lot of expenses on exports, including Packing Cost, the Authority notes that the exports from Korea RP have taken place in packed form only.

53. In the imports data, the information has been provided on CIF value basis. The expenses incurred in export transactions on account of inland freight in exporting country, Ocean Freight, Marine Insurance and port expenses have been adjusted to arrive at the ex-factory export price. The ex-factory export price has been determined separately for technical and food grade. By adopting this methodology, the ex-factory export price has been determined as US\$ 519.56 PMT for technical grade and US\$ 469.72 PMT for food grade and the average export price works out to US\$ 519.15 PMT.

H.3. Dumping Margin

54. For the purpose of determination of dumping margin the ex-works normal value and export prices so determined have been compared at the same level of trade and dumping margin has been determined for the exporters from the subject country as follows:

Exporter/ Producer	Import Volume (MT)	US\$/MT			
		Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %
Technical Grade	15281	***	***	***	35-45
Food Grade	127	***	***	***	70-80
Weighted Average		***	***	***	35-45

The dumped margin as determined above is more than *de minimis*.

I. INJURY DETERMINATION

I.1 View of the domestic industry

55. The domestic industry have made the following submissions:-

- a. The performance of the domestic industry improved in terms of volume parameters, which clearly shows that the domestic industry is trying its best to compete in the market and sustain its operations.
- b. Performance was expected to increase after imposition of duty against China.
- c. Performance in terms of price parameters improved, but the industry continues to make significant financial losses.
- d. Performance of the domestic industry improved in absolute terms in terms of sales volumes, capacity utilization, production, and productivity.
- e. Performance of the domestic industry however remained *sub-optimal* in terms of prices, profits, cash profits, return on investments and market share.
- f. Injury to the domestic industry has not been caused by the other factors, There is significant difference between the prices offered by the domestic industry and exporters from subject countries. Even when the domestic industry is offering sub-optimal prices, imports are increasing.
- g. Price undercutting caused by the dumped imports is causing price pressure on the domestic industry. As a direct consequence, the domestic industry continues to suffer financial losses, which increased in the period of investigation.
- h. Continued financial losses have been resulting in adverse performance in terms of cash flow and ROI. Thus, continued losses, negative return on capital employed and cash flow is directly due to dumped imports earlier from China PR and now from Korea RP.
- i. The performance of the domestic industry has suffered materially in the period of investigation and domestic industry has thus suffered material injury.
- j. The injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports.
- k. Definitive anti – dumping duties on the imports of subject goods from Korea RP are required to be imposed on the phosphoric acid of all grades (excluding agriculture/ fertilizer grade)
- l. Rising prices of inputs has not been identified as other known factor. On the contrary, this has been considered as a parameter of injury.
- m. The domestic industry is unable to utilize its capacities optimally because of dumping in Indian market.
- n. The domestic industry is unable to expand its capacities because of continued adverse performance of the product- first because of dumping from China and now because of dumping from Korea
- o. The domestic industry can enhance capacities by 15-20% through de-bottlenecking alone. When current investments are making significant losses, expansion of capacities in such situations would only add fuel to the fire.
- p. Inability of the domestic industry to meet the demand for the market cannot be held as reason for dumped imports, an established position arising out of past decisions of the Designated Authority and CESTAT

- q. Capacity utilization increased, therefore, production increased; how domestic industry lost market share to imports from South Korea
- r. Productivity reduced due to employment loss and increased wages has been offset by increase in productivity.

I.2 Views of Other Interested parties

56. M/s Economic Law Practice, Mumbai on behalf of M/s Hindustan Unilever Ltd. have made the following submissions on injury determination:

- a) The Preliminary Findings are bad in law and in clear violation of anti-dumping Rules and anti-dumping agreement. The Hon'ble DGAD has wrongly determined a causal link between the injury factors and the alleged dumping.
- b) The DGAD is required to consider all the relevant injury factors listed in the Rules as well as other known factors and then establish a causal link between the dumped imports and the injury factors. DGAD failed to provide an adequate explanation as to how the domestic industry suffered injury despite positive trends in a number of the injury factors.
- c) The Preliminary Findings have been issued in clear violation of Annexure II (ii), (iv) and (v) of the Rules and Articles 3.2, 3.4 and 3.5 of the Anti-dumping Agreement.
- d) The domestic industry has not suffered any injury due to alleged dumped imports from South Korea.
- e) The Preliminary Findings are bad in law because while the data for the purpose of sales and imports has been considered from Period of Investigation going back three preceding years, price data specifically after paragraph 55 of the Preliminary Finding is considered for only the Period of Investigation going back two preceding years has been considered.
- f) In spite of positive trends in most injury factors, the DGAD has concluded that the domestic industry has suffered injury and failed to provided any reasoning for the same.
- g) The domestic injury suffered because of rising price of rock phosphate during the period of investigation. As a result there is no causal link between the injury and allgededly dumped imports.
- h) In view of the settled jurisprudence, the Hon'ble Designated Authority should evaluate the injury data for the Domestic Industry as a whole and not only the Petitioners even if they claim to have a majority.
- i) the injury analysis in the Preliminary Finding is clearly skewed which resultantly led to illegal imposition of anti-dumping duties.
- j) production and sales of the domestic industry have been constantly increasing. Further it can be seen that seen that the fall in market share is on account of the inability of the domestic industry to satisfy the demand of the domestic market.
- k) the size of the domestic market has increased 51%, whereas the sales of the domestic industry have only 31% because the domestic industry does not have capacity to supply to the domestic industry.

I.3. Examination by the Authority

57. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that

"A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products."

58. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."

I.3.1 Volume and market share in imports

59. Imports volume from subject country and other countries have been as under:

Imports in MT	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Korea RP	0	324	772	15,408
Trend	0	100	238	4,756
China PR	3,148	4,600	3,378	2469
	100	146	107	78
Other Countries	2,974	230	429	252
	100	8	14	8
Total Imports	6,122	5,154	4,579	18,129
Trend	100	84	75	296
Market Share in Imports %				
Korea RP	-	6.29	16.86	84.99
Trend		100	268.19	1,351.98
China PR (Attracting Duty)	51.42	89.25	73.77	13.62
Trend	100	174	143	26

Other Countries	48.58	4.46	9.37	1.39
Trend	100	9	19	3

60. For analysis of imports, transaction-wise data of imports as per DGCIS has been relied upon for the years 2004-05 to 2006-07. However, for 2007-08, the imports reported by IBIS are much higher than those reported in DGCI&S. DGCI&S reported 6935 MT of subject goods from Korea RP as against 15408 MT reported by IBIS. Since the DGCI&S has not captured the full volume of imports of subject goods in the dedicated custom codes, the volume reported by IBIS has been relied upon for analyzing the volume effect. Following the disclosure statement, one of the interested party namely the importer has commented that the Authority has not fulfilled its responsibility by picking up import data from various sources of data without the same being in the petition and has asked the Authority to consider their submission in this regard. The submission of the importer has been analysed and an analysis of the DGCIS as well as IBIS data was made for the subject goods import from the subject country as well as other countries. On analyzing the data, it was noted that the volume of the import from earlier period i.e 2004-05 to 2006-07 has maintained a similar trend to that of DGCI&S. For example, the volume of import of subject goods in 2004-05 was nil for both DGCI&S as well as IBIS while it was 324 MT in DGCI&S and 403 MT in IBIS during 05-06. The same trend was maintained during 06-07 where the import of subject goods from Korea RP was 772 MT in DGCI&S and 722 MT in IBIS. Thus, there is similarity of volume which has been reported from two sources till the beginning of POI. However, the Authority has taken the IBIS volume and price for the POI in the finding because of the large difference in the volume of the import from both the sources. It is also noted that the price per Kg of the subject goods from both the sources are also similar.

61. The imports of Phosphoric Acid can be made in packed and loose form. The domestic industry has argued in the application that imports are being reported in packed form only. The imports data shows that import consignments of Phosphoric Acid (Food and Technical Grade) from Korea RP ranges from 52 kg. to 137.20 MT. Since it may not be commercially viable to import such small quantity of Phosphoric Acid in loose form in ship loads, the Authority notes that imports of the Phosphoric Acid of Food and Technical Grade during POI can be made in packed form only. Further, based on the few import documents provided by the importers and the submission of one of the importers that the Exporter/ Supplier of Korea RP are incurring a lot of expenses on exports, including Packing Cost, the Authority notes that the exports from Korea RP have taken place in packed form.

62. Data shows that imports from Korea RP have increased significantly from Nil in 2004-05 to 15408 MT during POI. During the same period imports from other countries have declined significantly. Further, Korea RP holds significant market share of total imports in India. It is also seen that between 2004-05 and investigation period, whereas market share of Korean imports increased significantly from nil to 85%, the share of imports from other countries including China PR declined from 100% in 2004-05 to 15% in POI.

I.3.2 Market share in demand

63. The Authority has determined domestic consumption/demand of the subject goods considering domestic sales of the domestic industry, sales of other Indian producers and total imports of the subject goods into India. Demand of subject goods so determined is given in the following table:

Demand	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Total Korean Imports in MT	-	324	772	15,408
Other Imports	6,122	4,830	3,807	2,721
Sales – domestic industry in MT	38,462	42,074	51,767	52,465
Sales – Other Producers in MT	4,286	4,759	4,500	3,000
Total Demand in MT	48,870	51,987	60,846	73,594
Trend	100	106	125	151
Market Share in Demand in %				
Domestic industry	78.70	80.93	85.08	71.29
Other Indian Producers	8.77	9.15	7.40	4.08
Korea RP	-	0.62	1.27	20.94
China	6.44	8.85	5.55	3.35
Other Countries	6.09	0.44	0.71	0.34

64. Data shows that demand of subject goods grew by 51% during POI as compared to base year. The market share of dumped imports in demand from Korea RP increased from Nil during 2004-05 to 20.94% during the POI whereas the market share of domestic industry has decreased from 78.70% to 71.29% during the same period.

I.3.3. Imports in relation to production of the domestic industry

65. The Authority notes that the imports from Korea RP have increased in relation to the Indian production and consumption of the domestic industry, as is evident from the following table:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Imports from					
Korea RP	MT	0	324	772	15408
Production DI	MT	39,288	45,857	49,540	51,601
Production other domestic producers	MT	4,286	4,759	4,500	4,500

Total domestic production	MT	43,574	50,616	54,040	56,101
Demand	MT	48,870	51,987	60,846	73,594
Imports from Korea in relation to					
Production	%	-	0.64%	1.43%	27.46%
Consumption	%	-	0.62%	1.27%	20.94%
Market Share of Domestic industry	%	78.70	80.93	85.08	71.29

66. Authority notes from the above that:

- (i) Volume of imports from Korea RP has increased significantly in absolute terms over the period.
- (ii) Imports from Korea RP have increased significantly in relation to production and consumption in India.
- (iii) As a result of increase in imports in absolute term and relative to production and consumption, share of the domestic industry has declined.

I.3.4. Capacity, production & capacity utilization

67. Capacity, Production and Capacity Utilization of the domestic industry have been as under:

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Capacity MT	50,306	50,306	50,306	50,306
Indexed	100	100	100	100
Production MT	39,288	45,857	49,540	51,601
Indexed	100	117	126	131
Capacity Utilization %	78%	91%	98%	103%
Indexed	100	117	126	131
Total Demand in MT	48,870	51,987	60,846	73,594
Indexed	100	106	125	151
Production in relation to Demand	80.39%	88.21%	81.42%	70.12%
Sales in relation to Demand	78.70%	80.93%	85.08%	71.29%

68. The data shows that demand of subject goods grew increased by 51% during POI as compared to base year. During the same period the production and capacity utilization of the domestic industry increased by 31%. The Authority notes the domestic industry has increased their production and capacity utilization to extent possible to meet the increase in demand inspite of financial losses.

69. The domestic industry has attributed the dumping, first from China PR and now from Korea RP, and the consequent adverse performance as a reason for its inability to expand its capacities. The domestic industry claimed that they can enhance capacities by 15-20% through de-bottlenecking alone but when current investments are making significant losses, expansion of capacities in such situations would only add fuel to the fire.

70. The Authority notes that during POI, even at the maximum utilization of the capacity, the domestic industry is not able to recover at least its cost of production.

I.3.5. Sales

71. Sales Volume of the domestic industry have been as under:

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Sales in MT	38,462	42,074	51,767	52,465
Indexed	100	109	135	136
Demand in MT	48,870	51,987	60,846	73,594
Indexed	100	106	125	151
Market Share in Demand in %	78.70	80.93	85.08	71.29
Indexed	100	103	108	91

72. The data shows that sales of the domestic industry increased by 36% during POI as compared to the base year. In comparison the demand of the subject goods increased by 51% during the same period. The share of domestic industry in demand declined from 78.70% in 2004-05 to 71.29% in POI. Since the domestic industry was operating at the optimum level of capacity utilization, the decline in market share was imminent with the increase in demand. However, the Authority notes that the market share of subject goods from subject country has substantially increased their market share in the Indian Market.

I.3.6. Price Effect of the Dumped Imports on the Domestic Industry

73. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

i. Price undercutting and underselling effects

74. To determine price undercutting, the comparisons have been made by comparing the phosphoric acid of the same grades. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the IBIS data of import prices from the subject country.

75. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

76. Price undercutting has been determined while making comparison of landed value of Technical and food grades of subject goods imported during POI with the identical grades produced by the domestic industry. Weighted average price undercutting is as under:

Price undercutting

Price undercutting – POI	Tech Grade	Food Grade	Weighted Avg. for Tech & Food Grade
Landed Price Rs. Per MT	26374	24062	26355
Net Selling price Rs. Per MT for Packed	***	***	***
Price undercutting Rs. Per MT	***	***	***
Price undercutting %age	10-20	20-30	10-20

77. Price underselling has been determined by comparing the weighted average landed price of imports of subject goods with the Non-injurious price of the same produced by the domestic industry during the POI. Weighted average price underselling has been under:

Price underselling

Price underselling – POI	Tech Grade	Food Grade	Avg. for Tech & Food Grade
Landed Price Rs. Per MT	26374	24062	26355
Non-Injurious Price Rs. Per MT for Packed	***	***	***
Price undercutting Rs. Per MT	***	***	***
Price undercutting %age	25-35	35-45	25-35

78. The above data shows that the landed value of the dumped imports is significantly below the net sales realization of the domestic industry and causing undercutting in the range of 15-30% of the selling prices of the domestic industry. The landed values were also below the non-injurious prices resulting in underselling in the range of 30-45%.

ii) Price suppression and depression effects

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Cost of Sales (Rs. Per MT)	***	***	***	***
Indexed	100	90	97	98
Selling Price(Rs. Per MT)	***	***	***	***
Indexed	100	99	92	102
Profit/Loss(Rs. Per MT)	***	***	***	***
Indexed	-100	-19	-133	-60

79. It is noted from the above that performance of the domestic industry for product under consideration, which improved in 2005-06 deteriorated in 2006-07 due to imports mainly from China PR. After levy of anti-dumping duties on imports of subject goods from China PR in 2007-08, the performance of the domestic industry improved in 2007-08 over 2006-07, yet, the domestic industry remained in significant losses during 2007-08. The domestic industry could not increase its selling prices to match the cost of sales indicating the suppression of domestic prices.

80. The information regarding CIF prices from Korea RP and corresponding landed value is given in the following table:

CIF Import Price from Korea RP		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Technical Grade	Rs./MT	No imports	24863	23382	23761
Trend	Index		100	94	96
Food Grade	Rs./MT	No imports	28034	23306	21677
Trend	Index		100	83	77
Avg – Technical & Food grade	Rs./MT	No imports	24866	23380	23743
Trend	Index		100	94	95
Landed Value					
Technical Grade	Rs./MT	No imports	28841	26538	26374

Trend	Index		100	92	91
Food Grade	Rs./MT	No imports	32520	26452	24062
Trend	Index		100	81	74
Average – Technical & Food grade	Rs./MT		28845	26536	26355
Trend	Index	No imports	100	92	91

81. It is noted from the above that the CIF price of imports from Korea RP have consistently declined over the injury period. Both decline in CIF price and the decline in rate of Customs duty triggered a substantial reduction in the landed price of imports. One on the user and importer of the subject goods, M/s Sandeep Organics Pvt. Ltd., Mumbai have confirmed in their submissions that both decline in CIF price and the decline in rate of Customs duty triggered a substantial reduction in the landed price of imports.

82. The landed price of imports is significantly below the cost of production of the domestic industry. As a result, the imports had made a suppressing impact on the prices of domestic industry in the market.

I.4. Examination of other injury factors

83. After examining volume and price effect in the previous section, the Authority has examined the other injury parameters in the following paragraphs.

84. The Authority notes that the imports from Korea RP increased from nil during 2004-05 to 15408 during POI. The performance of the domestic industry remained significantly deteriorated from 2005-06 to POI, i.e., the period of commencement of imports of subject goods from Korea RP.

I.4.1. Profitability

85. The profit/ loss of the domestic industry from the sale of the subject goods in domestic market were as follows:-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Cost of Sales (Rs. Per MT)	***	***	***	***
Indexed	100	90	97	98
Selling Price(Rs. Per MT)	***	***	***	***
Indexed	100	99	92	102

Profit/Loss(Rs. Per MT	***	***	***	***
Indexed	-100	-19	-133	-60
PBIT Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed	-100	25	-345	-149
Net Fixed Assets (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	100	91	103
Working Capital Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed	100	127	83	129
Capital Employed For Domestic Sales Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed	100	108	89	110
PBIT Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed	-100	25	-345	-149
Return on Capital Employed – NFA %	***	***	***	***
Indexed	-100	23	-389	-135

86. The data shows that the average cost of sales as compared to base year declined by 3% in 2006-07, and 2% during POI as compared to 2004-05. During the same period, the average selling price declined by 8% in 2006-07 but increased by 2% during POI. Although the domestic industry was able to increase its prices during POI consequent to levy of anti-dumping duties on imports from China PR, the sales realization still remained below the cost of sales. At the same time, imports from Korea RP increased to 15408 MT during POI from nil during 2004-05. The performance of the domestic industry remained significantly deteriorated over the injury period.

87. The profit (PBIT) of the domestic industry has declined from (-)100 (indexed) in 2004-05 to (-) 149 in POI. Consequently, the return on the Capital Employed for domestic sales of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the 2004-05 and during the POI the domestic industry had a return on domestic sales of (-) 135 (indexed) from (-)100 (indexed) of the 2004-05.

88. The Authority further notes the domestic industry is not able to realize even its operational cost of production of the subject goods resulting not only in the significant financial losses but significant cash losses.

I.4.2. Cash Flow

89. The Authority notes that both the constituents of the domestic industry are multi products, multi-location companies. None of the companies maintain separate information regarding cash flow of the product under consideration. Cash losses came down during the POI due to levy of anti-dumping duties against China PR but still continued to remain negative at significant levels, as shown below:

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Profit / loss before tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Depreciation on domestic sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Cash profit on domestic sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	74	-241	-38

I.4.3. Employment and Wages

90. Employment & Wages levels of the domestic industry are given in the following table:

	2005-06	2006-07	2007-08
Employment No	***	***	***
Indexed	100	98	92
Wages Rs. Lacs	***	***	***
Indexed	100	125	130

91. The level of employment and wages do not show any adverse trend during the injury period.

I.4.4. Productivity

92. Productivity of the domestic industry, as reflected in terms of production per employee, has improved over the injury period due to optimum utilization of the available capacity, as shown below:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Production	MT	39,288	45,857	49,540	51,601
Employment	No.	***	***	***	***
Productivity	MT/No.	***	***	***	***

Trend	Indexed	100	112	124	138
-------	---------	-----	-----	-----	-----

93. It may be seen from the above that injury caused to the domestic industry cannot be attributed to the loss in the productivity, which has infact improved during the POI.

I.4.5. Inventory

94. The domestic industry has maintained the optimum inventory levels as shown below:

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Inventory in MT	***	***	***	***
Indexed	100	477	600	277
Sales in MT	38,934	42,662	51,821	52,483
Inventory for no. of days sales (Days)	***	***	***	***
Indexed	100	435	451	205

95. It is noted that these inventory levels are not very significant and may not taken as an effect of injury.

I.4.6. Growth

96. The domestic industry has shown positive growth in terms of absolute volume of production and sales over the injury period. However, the growth is negative when examined in terms of market share, profit before interest & tax and return on investment.

I.4.7. Ability to raise capital/investment

97. The Authority notes that negative profitability and negative cash profits may affect the credit rating of the domestic industry to raise the fresh capital/ investment. However, both the petitioners are multi product companies and ability to raise investment may not be an indictor of impact of dumping on the domestic industry.

I.4.8. Magnitude of Dumping

98. The dumping margin determined for the subject country and the applicant exporter is substantial and above de minimis level.

I.4.9. Factors affecting prices

99. The selling price of domestic industry continued to remain below the cost of sales in the period of investigation. The undercutting of selling price by imports continued throughout from 2005-06. It has also been noted that the basic custom duty also declined from 15% in 2005-06 to 10% in POI.

I.5. Examination of injury by the Authority and Conclusions on injury

100. The imports from Korea RP have increased significantly from Nil in 2004-05 to 15408 MT during POI. In percentage terms, the Imports share from Korea RP has increased in total imports to India from nil to 85% whereas imports from other countries including China PR has declined from 100% in 2004-05 to 15% in POI.

101. The market share of dumped imports in demand from Korea RP increased from Nil during 2004-05 to 20.94% during the POI whereas the market share of domestic industry has decreased from 78.70% to 71.29% during the same period. The Domestic Industry was operating at its maximum capacity during POI and the decline in market share was imminent with the increase in demand. The domestic industry has attributed the dumping, first from China PR and now from Korea RP, and the consequent adverse performance as a reason for its inability to expand its capacities. The domestic industry claimed that they can enhance capacities by 15-20% through de-bottlenecking alone.

102. The demand of subject goods increased by 51% during POI as compared to base year. During the same period the production and capacity utilization of the domestic industry increased by 31%. The domestic industry increased its production and capacity utilization to extent possible to meet the increase in demand inspite of financial losses. It is noted that the domestic industry is not able to realize even its operational cost of production of the subject goods resulting not only in the significant financial losses but significant cash losses. The domestic industry must recover at least its cost of production at the maximum utilization of the capacity, which has been denied by the adverse market conditions created by the dumped imports from Korea RP.

103. The price undercutting is in the range of 15-30% and price underselling is in the range of 30-45%. The undercutting of selling price by imports continued throughout since 2005-06. It has also been noted that the basic custom duty also declined from 15% in 2005-06 to 10% in POI.

104. The average cost of sales as compared to base year declined by 3% in 2006-07, and 2% during POI as compared to 2004-05. During the same period, the average selling price declined by 8% in 2006-07 but increased by 2% during POI. Although the domestic industry was able to increase its prices during POI consequent to levy of anti-dumping duties on imports from China PR, the sales realization still remained below the cost of sales due to presence of imports from Korea RP, which increased from nil during 2004-

05 to 15408 during POI. The performance of the domestic industry remained significantly deteriorated over the injury period.

105. The profit (PBIT) of the domestic industry has declined from (-)100 (indexed) in 2004-05 to (-) 149 in POI. Consequently, the return on the Capital Employed for domestic sales of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the 2004-05 and during the POI the domestic industry had a return on domestic sales of (-) 135 (indexed) from (-)100 (indexed) of the 2004-05. The domestic industry is not able to realize even its operational cost of production of the subject goods resulting not only in the significant financial losses but significant cash losses.

106. Thus, the analysis of economic parameters indicate significant decline in financial performance and material injury to the domestic industry. The above analysis indicates that though domestic industry was in position to increase production and sales, there was sharp decline in profitability showing material injury to the domestic industry. Thus, on the basis of the above examination, it is concluded that the domestic industry has suffered material injury on account of dumped imports from subject goods from subject country.

107. The Authority notes that the Rules require examination and assessment of performance of the domestic industry over the period, by considering a number of parameters listed under the Rules. Further, while the Rules provide for examination and assessment of all listed parameters, it does not provide that the performance of the domestic industry must deteriorate in terms of each and every parameter. Further, the Rules provide for assessment of whether the performance of the domestic industry has deteriorated or declined in respect of these parameters and whether such deterioration is significant. Therefore, in context of injury to the domestic industry in an anti-dumping investigation, the overall assessment of injury is required to be made on the basis of performance of the domestic industry in respect of various parameters.

J. Causal Link and Other Factors

108. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Rules and Agreement on Anti Dumping have been examined to see whether there is any other factor, other than the dumped imports which could have contributed to injury to the domestic industry. Accordingly, the following parameters have been examined:

i) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

It is noted from IBIS data that about 85% imports are from Korea RP during POI and the balance 14% from China PR are already attracting anti-dumping duties. The imports from other countries are just 1%. Therefore, the imports from other countries do not affect the prices in the domestic market;

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, the injury to the domestic industry has nothing to do with the lack of demand in the country. The data on consumption and demand does not show any change in the pattern of consumption of the product and has not been a factor causing injury to the domestic industry.

iii) Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

The goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for significant domestic production and sales. No evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has come to the knowledge of the Authority.

iv) Development in technology

No significant changes in technology have come to notice, which could have caused injury to the domestic industry.

v) Export performance of the domestic industry

Domestic industry does not have significant exports over the injury period. However, the analysis of financial performance has been done for domestic sales only. Hence, export performance has not been considered in the analysis of injury to the domestic industry. Therefore, the export performance cannot be considered as factor causing injury to the domestic industry.

vi) Productivity of the Domestic Industry

Productivity of the domestic industry has improved. Therefore, this cannot be attributed to the injury to the domestic industry.

109. The above non-attribution analysis shows that no other known factors, other than the dumped imports, appear to have affected the domestic industry.

J.1. Factors establishing causal link and conclusions on causal link

110. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a. The volume of dumped import from the subject country has sharply increased at significantly lower prices during the injury investigation period, resulting in

significant price undercutting and underselling. As a direct consequence, the domestic industry could not increase its prices in line with increase in the cost of production resulting in financial losses.

- b. The increased market share of Korea RP at dumped prices has created adverse market conditions and caused price pressure on the domestic industry and has denied the domestic industry to recover at least its cost of production at the maximum utilization of the capacity.
- c. The dumped imports from Korea RP caused suppression of domestic prices that adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.

111. Therefore, the Authority concludes that the domestic industry suffers material injury and the injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject country.

K. Magnitude of Injury and injury margin

112. The non-injurious prices for Technical and Food grade of Phosphoric Acid produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports from the subject country for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject country and injury margins have been worked out as follows:

Injury Margin – POI	Tech Grade	Food Grade	Average for Tech & Food Grade
Landed Price USD/ MT	***	***	***
NIP (Packed) USD/MT	***	***	***
Injury Margin USD/MT	***	***	***
Injury Margin %	35-45	65-75	35-45

L. Conclusions

113. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the Authority concludes that:

- a. The subject goods have been exported to India from the subject country at prices less than their normal values in the domestic market of the exporting country;
- b. The dumping margins of the subject goods imported from the subject country are substantial and above de minimis;

- c. The domestic industry have suffered material injury and the injury has been caused to the domestic industry, both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.
- d. The Authority thus considers necessary to recommend anti-dumping duty on imports of subject goods falling under Chapter 28 of Customs Tariff Act originating in or exported from the subject country.

M. Indian Industry's Interest & Other Issues

114. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to facilitate to re-establish a situation of open and fair competition.

115. The Authority also recognizes that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would eliminate the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and help in maintaining availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

N. Recommendations

116. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on various aspects of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry, in terms of the Rules laid down and having established positive dumping margin against the subject country and having concluded that the domestic industry suffers material injury due to such dumped imports, the Authority is of the opinion that imposition of anti-dumping measure is required to prevent injury being caused to the domestic industry during the investigation period.

117. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.

118. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping

and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, antidumping duty equal to the amount indicated in Col 9 of the table below is recommended to be imposed by the Central Government on imports of Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade) falling under Chapter 28 of Custom Tariff Classification Act 1975, originating in or exported from the Korea RP.

Duty Table

(1) Sr. No.	(2) Sub heading	(3) Desc- ription of goods	(4) Speci- fication	(5)		(6)	(7) Prod- ucer	(8) Exp- orter	(9) Amount	(10) Unit of measur- ement	(11) Currency
				Country of Origin	Export						
1	2809- 2010	Phosph oric Acid	All grades & Concen trations (exclud ing Agricul tural/ Fertilise r grade)	Korea RP	Any	Any	Any	Any	221.64	MT	US\$
2	-do-	-do-	-do-	Any	Korea RP	Any	Any	Any	221.64	MT	US\$

119. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 22nd June, 2009.

120. An appeal against the findings after its acceptance by the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

R. GOPALAN,

Designated Authority